www.ghoonghatkibagawat | www.ghoonghatkibagawat | ghoonghatkibagawat37@gmail.com

घूँघट की बगावत

UP/HIN/1999/1282

प्रत्येक रविवार को प्रकाशित

हिन्दी साप्ताहिक समाचार पत्र

वर्ष : 25 अंक : 07 | गोरखपुर, 10 अगस्त 2025 रविवार | पृष्ठ : 6 | मूल्य : 2

ट्रंप की दबाव की रणनीति के खिलाफ राष्ट्रहित में मोदी सरकार का समर्थन जरूरी : शरद पवार

पुणे। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (शरद चंद्र पवार) प्रमुख शरद पवार ने अमेरिकी शुल्क का हवाला देते हुए शनिवार को अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की दबाव की रणनीति के खिलाफ राष्ट्रीय हित में केंद्र सरकार का समर्थन करने का आह्वान किया।

पवार ने नागपुर में संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा, ह्यह्यभारतीय वस्तुओं पर 50 प्रतिशत शुल्क (टैरिफ) लगाना दबाव बनाने की रणनीति है। हम भारत के लोगों को देश के हितों की रक्षा के लिए सरकार का समर्थन करना चाहिए। पूर्व केंद्रीय मंत्री ने कहा कि वह इस बात पर अटकलें नहीं लगाना चाहते कि मोदी सरकार की विदेश नीति विफल हो गई है या नहीं। उन्होंने कहा, ह्यह्यहमने पहले कार्यकाल में भी अमेरिकी राष्ट्रपति के रूप में ट्रंप की कार्यशैली देखी थी। मुझे लगता है कि उन पर किसी का नियंत्रण नहीं है। जो भी उनके दिल में आता है, वह आवेग में आकर बोल देते हैं। शरद पवार ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को भारत और पड़ोसी देशों के बीच बढ़ती दूरी के संकेतों को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। उन्होंने कहा, ह्यह्यहम अपने पड़ोसी देशों के प्रति अपने रवैये को भी नजरअंदाज नहीं कर सकते। आज पाकिस्तान हमारे खिलाफ है, जबकि नेपाल, बांग्लादेश, श्रीलंका और मालदीव जैसे देश हमसे खुश नहीं हैं।

राकांपा (एसपी) प्रमुख ने कहा, ह्यह्यहमारे पड़ोसी हमसे दूर जा रहे हैं। मुझे लगता है कि मोदी साहब को इस पहलू को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए और संबंधों को बेहतर बनाने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।

सरकार ने संस्कृत को लोकप्रिय बनाने के लिए अनेक प्रयास किए हैं: प्रधानमंत्री

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शनिवार को विश्व संस्कृत दिवस पर अपने संदेश में कहा कि उनकी सरकार ने पिछले एक दशक में इस प्राचीन को लोकप्रिय बनाने के लिए अनेक प्रयास किए हैं। उन्होंने कहा कि संस्कृत ज्ञान और अभिव्यक्ति का एक शाश्वत स्रोत है तथा इसका प्रभाव हर क्षेत्र में देखा जा सकता है।

मोदी ने कहा कि यह इस को सीखने और इसे लोकप्रिय बनाने के लिए प्रयासरत सभी लोगों के प्रयासों की सराहना करने का अवसर है। यह दिवस प्रतिवर्ष ह्यश्रावण पूर्णिमाह्ल के अवसर पर मनाया जाता है।

प्रधानमंत्री ने इस संबंध में अपनी सरकार द्वारा उठाए गए कदमों को सामने रखते हुए केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय की स्थापना, संस्कृत शिक्षण केंद्रों की स्थापना, इस के विद्वानों को अनुदान देने और प्राचीन संस्कृत पांडुलिपियों के डिजिटलीकरण के लिए एक मिशन की शुरूआत जैसे विभिन्न उपायों का हवाला दिया। उन्होंने कहा कि इससे अनगिनत विद्यार्थियों और शोधकताओं को लाभ हुआ है। हिंदू महाकाव्यों समेत कई प्रभावशाली प्राचीन पुस्तकें संस्कृत में लिखी गई हैं। लेकिन संस्कृत अब ऐसी बनकर रह गई है जो बड़े पैमाने पर धार्मिक कार्यों में ही सीमित हो गई है।

सलाखों के पीछे भाई की आंखों से झरता सावन

▶ 20 मिनट का रक्षा बंधन

भोपाल। ये वो बहनें हैं जो राखी पर मायके नहीं आतीं. इन बहनों का पीहर, आंगन, त्योहार खुशियां सारी, सब सलाखों के पीछे हैं। पूरे साल का ये एक दिन त्योहार से ज्यादा मुलाकात का दिन होता है... भोपाल सेंट्रल जेल के बाहर अलसुबह से पहुंच गई बहनें जानती हैं कि उम्र भर के रिश्ते को जी लेने के कुल बीस मिनिट ही हैं इनके पास। भाई को जी भर दुलारने... ये कहने कि दुनिया के लिए भले अपराधी हों। बहनों की आंखों का तो तारा है भैय्या। भोपाल सेंट्रल जेल में कैदी नंबर और नाम के साथ कि ये पुकार कि आपके मुलाकाती आएं हैं। इन कैदियों के लिए ये सबसे बड़ा भरोसा है कि अपराध की सजा भुगत लेने के बाद कोई तो है जो सलाखों के बाहर उनका इंतजार कर रहा है। बीस मिनिट रक्षाबंधन पर मिली रिहाई...त्योहार की ये तस्वीर भी देखिए। सावित्री पूरे पांच महीने बाद अपने भाई से मिल रही हैं। सावन पर भाई आता था लिवाने लेकिन इस बार की राखी बहन भाई से मिलने दो बस बदल कर आई है। सावित्री का भाई भोपाल सेन्ट्रल जेल में विचाराधीन कैदी है। पांच महीने पहले सजा हुई है. जेल के बाहर मुलाकात के इंतजार में सावित्री जब भाई से मिलती है तो कलाई पर राखी बांधते भावुक हुए कहती है, मुझे तुझसे कुछ नहीं चाहिए. तू बस जल्दी से जल्दी घर आ जा।

हार से हताश कांग्रेस के शहजादे फैला रहे झूठा एजेंडा : सीएम सैनी

चंडीगढ़। हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने राहुल गांधी पर हमला तेज करते हुए शुक्रवार को आरोप लगाया कि लगातार हार से हताश कांग्रेस के ह्यशहजादेह्ल अब देशभर में ह्यझूठाह्ल एजेंडा फैला रहे हैं। उन्होंने कहा कि गांधी ने पहले संविधान के संबंध में झूठा एजेंडा फैलाया और अब मतदाता सूची के संबंध में। सैनी ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा, हरियाणा विधानसभा चुनाव की आठ सीटों पर 22,779 वोटों के अंतर से कांग्रेस की हार को वह चुनावी गड़बड़ी का बहाना बना रहे हैं। राहुल गांधी ने बृहस्पतिवार को कहा था कि हरियाणा विधानसभा चुनाव में कांग्रेस की जीत और हार का अंतर पूरे राज्य में सिर्फ 22,779 मतों का था। सैनी ने कहा, ह्यह्यमहोदय, अगर यही 22 हजार वोट भाजपा को मिले होते, तो हम कम से कम 10 सीटें और जीत सकते थे। भाजपा को तो सिर्फ 12,592 वोटों के मामूली अंतर से सात सीटों पर हार झेलनी पड़ी। जिनमें लोहारू, आदमपुर, रोहतक, सढौरा, पंचकूला, फतेहाबाद और थानेसर शामिल हैं। मुख्यमंत्री ने कहा, ह्यह्यमैं स्पष्ट तौर पर राहुल गांधी से कहना चाहता हूं कि वे बार-बार जनता के जनादेश को अपमानित करना बंद करें और अपनी दिशाहीन, विफल और गुटबाजी में उलझी कांग्रेस को संभालें।

सैनी ने बृहस्पतिवार को भी कांग्रेस नेता पर निशाना साधते हुए दावा किया था कि पिछले दो दशकों में राहुल गांधी ने राजनीति में खुद को स्थापित करने के कई प्रयास किए, लेकिन असफल रहे। उन्होंने कहा, ह्यह्यराहुल गांधी हर मुद्दे पर भारत की संवैधानिक संस्थाओं पर अनावश्यक टिप्पणी करते रहते हैं; अपने राजनीतिक अस्तित्व को बचाने के लिएनिर्वाचन आयोग पर टिप्पणी करना अनुचित है ह्लह्ल मुख्यमंत्री ने आरोप लगाया कि गांधी न केवल असफल हुए हैं, बल्कि उन्होंने अपने साथ पूरी कांग्रेस को भी डुबो दिया है।

कर्नाटक के मुख्य निर्वाचन अधिकारी ने राहुल के आरोपों की जांच के आदेश दिये : शिवकुमार

बेंगलुरु। कर्नाटक के उपमुख्यमंत्री डीके शिवकुमार ने शुक्रवार को बताया कि राज्य के मुख्य निर्वाचन अधिकारी(सीईओ) वी अंबुकुमार ने कांग्रेस नेता राहुल गांधी के चुनावी धोखाधड़ी के आरोपों की जांच के आदेश दिए हैं। शिवकुमार के नेतृत्व में कांग्रेस के एक प्रतिनिधिमंडल ने अंबुकुमार को ज्ञापन सौंपा। इसके बाद उप मुख्यमंत्री ने संवादाताओं से कहा कि उन्हें बताया गया है कि सीईओ कार्यालय ने अपनी जांच शुरू कर दी है।

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष शिवकुमार ने कहा, मुझे यह जानकर खुशी हुई। उन्होंने कहा कि वह दस्तावेज और सबूत हासिल करने के लिए फिर से सीईओ कार्यालय जाएंगे। उपमुख्यमंत्री ने कहा, ह्यह्यपहले चरण में हमने उनसे हर विधानसभा क्षेत्र की विस्तृत जानकारी देने को कहा है, जहां ऐसी घटनाएं हुई हैं।

भाजपा के आरोपों के बारे में पूछे जाने पर शिवकुमार ने कहा कि वह राज्य की मुख्य विपक्षी पार्टी को लेकर चिंतित नहीं हैं। शिवकुमार ने कहा, उन्हें (भाजपा नेताओं को) जो कहना है कहने दीजिए। हम एक अदालत, एक न्यायाधीश और एक स्वायत्त आयोग से अनुरोध कर रहे हैं। हमने उनसे (निर्वाचन आयोग से) कार्रवाई करने का अनुरोध किया है, क्योंकि मतदाता सूची तैयार करना, चुनाव कराना और तुरंत चीजें ठीक करना निर्वाचन आयोग की जिम्मेदारी है।

कांग्रेस नेता राहुल गांधी द्वारा लोकसभा चुनाव के दौरान महादेवपुरा निर्वाचन क्षेत्र में बड़े पैमाने पर चुनावी धोखाधड़ी का आरोप लगाने के बाद शिवकुमार ने सीईओ अंबुकुमार को एक ज्ञापन सौंपा। महादेवपुरा के पूर्व विधायक अरविंद लिंबावली ने बयान दिया है कि मुख्यमंत्री सिद्धरमैया के विधानसभा क्षेत्र वरुणा और मंत्री बी जेड जमीर अहमद खान के विधानसभा क्षेत्र चामराजपेट में भी फर्जी मतदाता थे। इस पर प्रतिक्रिया देते हुए शिवकुमार ने कहा कि निर्वाचन आयोग को इसकी जांच करनी चाहिए। उप मुख्यमंत्री ने कहा, ह्यह्यअगर मेरे निर्वाचन क्षेत्र (कनकपुरा) में भी ऐसे मुद्दे हैं, तो मुझे जांच पर आपत्ति नहीं है। धोखाधड़ी करने वालों और दुरुपयोग के दोषी लोगों के खिलाफ कार्रवाई होनी चाहिए।

श्री शिवराज सिंह चौहान ने बहनों से राखी बंधवाने के साथ पर्यावरण की रक्षा का भी संकल्प लिया। उन्होंने कहा कि मैं भोपाल के स्मार्ट सिटी पार्क में कई वर्षों से पेड़ लगा रहा हूं। यहां आज अपने लगाए पेड़ों को राखी बांधकर प्रसन्नता हुई है। पेड़ बचाने का अर्थ है पर्यावरण बचाना।

केन्द्रीय कृषि मंत्री ने नारी तू नारायणी का किया उद्घोष

भोपाल। केंद्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने आज मध्य प्रदेश, भोपाल के स्मार्ट सिटी पार्क में रक्षाबंधन के अवसर पर पेड़ पर राखी बांधकर पर्यावरण संरक्षण का संकल्प लिया। रक्षाबंधन की शुभकामनाएं देते हुए केंद्रीय मंत्री ने कहा कि देश की महिलाओं का आर्थिक, शैक्षणिक, सामाजिक और राजनीतिक सशक्तिकरण ही जीवन का मिशन है। इसके लिए सरकार द्वारा कई अभियान चलाए जा रहे हैं। उन्होंने नारी तू नारायणी का उद्घोष करते हुए कहा कि आज बहनें इतनी सशक्त हो गई है कि अब वह भाइयों की भी रक्षा कर सकती हैं। श्री शिवराज सिंह चौहान ने बहनों से राखी बंधवाने के साथ पर्यावरण की रक्षा का भी संकल्प लिया। उन्होंने कहा कि मैं भोपाल के स्मार्ट सिटी पार्क में कई वर्षों से पेड़ लगा रहा हूं। यहां आज अपने लगाए पेड़ों को राखी बांधकर प्रसन्नता हुई है। पेड़ बचाने का अर्थ है पर्यावरण बचाना। पूरे विश्व के लिए यह अहम है। पर्यावरण सुरक्षित रहेगा, तो दुनिया सुरक्षित रहेगी। केंद्रीय मंत्री ने सभी से आह्वान किया कि रक्षाबंधन के अवसर पर संकल्प लें कि आने वाली पीढियां के लिए धरती सुरक्षित रखने के लिए पेड़ बचाएंगे भी और पेड़ लगाएंगे भी! आगे, केंद्रीय मंत्री ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के राष्ट्रहित सर्वोपरि के दृढ़ संकल्प को दोहराते हुए एक बार फिर से देशवासियों से अपील की कि वह स्वदेशी उत्पादों को बढ़ावा दें और देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत करने की दिशा में कदम बढ़ाएं।

शिक्षा का मतलब सवाल पूछने की क्षमता विकसित करना : सिंधिया

भोपाल। केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने कहा कि शिक्षा का अर्थ केवल जीवन निर्माण नहीं है, बल्कि उस जीवन में अर्थ का निर्माण करने और सवाल पूछने की क्षमता विकसित करने में सक्षम होना है। केंद्रीय संचार मंत्री ने शुक्रवार को कहा , शिक्षा का उद्देश्य केवल यह प्रश्न पूछना नहीं होना चाहिए कि ह्यमैं कैसे सफल होऊं, बल्कि यह भी पूछना होना चाहिए कि ह्यमैं कैसे सेवा करूं।

सिंधिया भोपाल में ब्रिटेन से जुड़े श्रूसबरी इंटरनेशनल स्कूल के 150 एकड़ के परिसर के उद्घाटन के अवसर पर एक सभा को संबोधित कर रहे थे। दक्षिण एशिया के व्यापार आयुक्त और पश्चिमी भारत में ब्रिटिश उप उच्चायुक्त हरजिंदर कांग ने भी इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित किया। उन्होंने कहा, ह्यह्यमैं भारत में श्रूसबरी इंटरनेशनल स्कूल की शुरूआत के मौके पर शामिल होकर प्रसन्न हूं। यह पारस्परिक विकास पर आधारित भारत-ब्रिटेन की दोस्ती का एक नया अध्याय है।

उन्होंने कहा, पिछले महीने हमारे प्रधानमंत्रियों ने भारत-ब्रिटेन विजन 2035 को मंजूरी दी है। इस नयी साझेदारी से दोनों देशों के रिश्ते और मजबूत होंगे। इस दृष्टिकोण में शिक्षा और कौशल विकास पर खास ध्यान दिया गया है, जिससे आने वाली पीढ़ी को बेहतर मौके मिलेंगे। कांग ने उम्मीद जताई कि आने वाले समय में भारत और ब्रिटेन के विश्वविद्यालयों के बीच सहयोग भी बढ़ेगा। उन्होंने कहा, ब्रिटेन की सदियों पुरानी शिक्षा परंपरा और भारत के नए विचारों को मिलाकर हम युवाओं के लिए विश्वस्तरीय अवसर बना रहे हैं। इससे हमारे युवा आगे बढ़ेंगे और भविष्य को नई दिशा दे सकेंगे।

भोपाल में विश्व आदिवासी दिवस के अवसर पर कमलापति की मूर्ति पर विभिन्न जिलों से आए आदिवासी समाज के लोगों ने श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर, आदिवासी समुदाय के लोगों ने अपनी संस्कृति और परंपराओं को याद किया और उनके संरक्षण का संकल्प लिया।

घूँघट की बगावत

10 अगस्त 2025

प्रत्येक रविवार को प्रकाशित
हिन्दी साप्ताहिक समाचार पत्र

कौमी एकमा का प्रतीकः

बहनों ने मुस्लिम भाइयों की कलाई पर बांधी राखी

गोरखपुर। सांप्रदायिक सौहार्द, पर्यावरण संरक्षण और भाईचारे की भावना को समर्पित एक अनूठा आयोजन आज गोरखपुर के मुंशी प्रेमचंद पार्क में सम्पन्न हुआ। सन 2009 में शुरू हुई यह परंपरा आज 16वें वर्ष में प्रवेश कर गई है। इस अवसर पर हिंदू बहनों के एक समूह ने मुस्लिम भाइयों को राखी बांधकर रक्षाबंधन का पर्व मनाया और भाईचारे की मिसाल पेश की।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को राष्ट्रीय राजधानी में 7 लोक कल्याण मार्ग (एलकेएम) आवास पर स्कूली बच्चों के साथ रक्षाबंधन का त्यौहार मनाया। अच्छी खासी तादाद में जुटे छात्र-छात्राओं ने पीएम मोदी की कलाई को रक्षा सूत्र से भर दिया।

अनोखा रक्षाबंधनः पेड़ों को बाँधी राखी, दिया पर्यावरण संरक्षण का संदेश

परमाउंट अकादमी में इस वर्ष रक्षाबंधन का पर्व एक प्रेरणादायक तरीके से मनाया गया। भाई-बहन के पवित्र रिश्ते को प्रकृति से जोड़ते हुए छात्रों ने विद्यालय परिसर में लगे वृक्षों को राखी बाँधकर उनकी रक्षा करने का संकल्प लिया। इस विशेष पहल में विद्यालय की छात्राएं नव्या सिंघानिया, आकृति, जया, सान्वी, माहिरा, आरोही, अनुष्का, हैप्पी, दिविशा, श्रेया, रोशनी, राधिका, अनु, काव्या आदि ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

आयोजन का उद्देश्य था—ह्वपर्यावरण बचाओ, पेड़ बचाओह्व—और यह संदेश देना कि वृक्ष भी हमारी तरह रक्षक हैं, जैसे भाई अपनी बहन की रक्षा करता है। छात्रों ने रंग-बिरंगी राखियों से पेड़ों को सजाया और वचन दिया कि वे हमेशा इनकी सुरक्षा करेंगे। उन्होंने बताया कि पेड़ न केवल हमें ऑक्सीजन देते हैं, बल्कि गर्मी, धूल, प्रदूषण और प्राकृतिक आपदाओं से भी बचाते हैं।प्रधानाचार्या ने छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि रक्षा का अर्थ केवल रिश्तों तक सीमित नहीं है, बल्कि प्रकृति और जीवनदायी वृक्षों की सुरक्षा भी उतनी ही जरूरी है। छात्रों ने अधिक से अधिक पेड़ लगाने और उनकी देखभाल करने की शपथ ली। इससे पूर्व छोटे बच्चों ने आपस में राखी बाँधकर रक्षाबंधन का त्योहार धूमधाम से मनाया और बहनों को उपहार देकर उनकी रक्षा का वचन दिया।

सत्र के बीच शिक्षकों को सेवानिवृत्त नहीं करने पर सरकार कर रही विचारः सीएम सुक्खू

शिमला। मुख्यमंत्री सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने कहा कि बच्चों की पढ़ाई प्रभावित न हो, इसलिए सरकार शिक्षकों को शैक्षणिक सत्र के बीच सेवानिवृत्त न करने पर विचार कर रही है। शिक्षा, तकनीकी शिक्षा और चिकित्सा शिक्षा विभाग में इस नई व्यवस्था को शुरू करने के लिए मंथन जारी है। वहीं, शिक्षकों की पदोन्नतियां भी साल में दो बार करने की तैयारी है। शुक्रवार को राज्य अतिथि गृह पीटरहॉफ में 312 कला शिक्षकों को नियुक्ति पत्र प्रदान करते हुए मुख्यमंत्री ने उन्हें पुरानी पेंशन योजना (ओपीएस) का लाभ देने का भी एलान किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि केंद्र सरकार नई पेंशन योजना को दोबारा लाने का दबाव बना रही है, लेकिन राज्य सरकार अपने फैसले से पीछे नहीं हटेगी। विपक्ष पर जॉब ट्रेनी पॉलिसी को लेकर लोगों को गुमराह करने का आरोप लगाते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रशिक्षुओं को दो साल के सेवा कार्यकाल के बाद नियमित किया जाएगा। उन्होंने कहा कि शिक्षा के क्षेत्र में गुणात्मक सुधार लाने के लिए किए गए प्रयासों के फलस्वरूप वर्तमान में हिमाचल पांचवें स्थान पर पहुंचा है। उन्होंने कहा कि पिछली सरकार ने केवल राजनीतिक लाभ लेने के लिए अनेक स्कूल खोले, जबकि वर्तमान सरकार सार्वभौमिक शिक्षा के लक्ष्य को हासिल करने की दिशा में कार्य कर रही है। मुख्यमंत्री ने कहा कि सरकार पहले ही मेडिकल, नॉन मेडिकल और कला संकायों में 5,100 टीजीटी (प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक) पदों पर नियुक्ति प्रदान कर चुकी है। विद्यार्थी-शिक्षक अनुपात को ध्यान में रखते हुए प्रदेश में स्कूलों का युक्तिकरण किया जा रहा है। अत्याधुनिक सुविधाओं से लैस राजीव गांधी डे-बोर्डिंग स्कूल स्थापित किए जा रहे हैं। इनमें विशेषज्ञ शिक्षकों की तैनाती की जाएगी। इसके लिए शीघ्र ही भर्तियां शुरू की जाएंगी।

रोबोटिक सर्जनों को देंगे एक करोड़ रुपये तक का पैकेज

मुख्यमंत्री ने कहा कि अगले छह महीनों में अटल सुपर स्पेशलिटी आयुर्विज्ञान संस्थान चमियाना अस्पताल में एम्स स्तर की सुविधाओं का सृजन किया जाएगा। इसके उपरांत राज्य के सभी मेडिकल कॉलेजों को चरणबद्ध तरीके से स्तरोन्नत किया जाएगा। राज्य में श्रेष्ठ चिकित्सक सेवाएं प्रदान करें, इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए रोबोटिक सर्जनों को एक करोड़ रुपये तक का पैकेज दिया जाएगा।

सीमांत के किसी भी सरकारी अस्पताल में लेवल-टू जांच की सुविधा नहीं

फिलहाल जिले के किसी भी सरकारी अस्पताल में लेवल-टू जांच की सुविधा नहीं है। इसके लिए रेडियोलॉजिस्ट और आधुनिक मशीन जरूरी होते हैं। इस जांच की सुविधा उपलब्ध कराने के लिए शासन में पत्राचार किया जाएगा।

डॉ. एसएस नबियाल, सीएमओ, पिथौरागढ़

पिथौरागढ़। आधुनिक और बेहतर इलाज के दावों के बीच जिले के किसी भी सरकारी अस्पताल में गर्भवतियों की लेवल-टू जांच नहीं होती है। इस जांच के लिए न तो रेडियोलॉजिस्ट हैं और न आधुनिक मशीन। ऐसे में सीमांत जिले की गर्भवतियां लेवल-टू जांच के लिए मैदानी क्षेत्रों (हल्द्वानी, रुद्रपुर, बरेली आदि) के बड़े अस्पतालों पर निर्भर हैं। गर्भस्थ शिशु की शारीरिक संरचना, विकास और कमियों का पता लगाने के लिए लेवल-टू जांच जरूरी है। इस जांच में पता चलता है कि गर्भस्थ शिशु का विकास सही तरीके से हो रहा है या नहीं।

गर्भस्थ शिशु में कमियों का पता लगाकर समय रहते इलाज किया जा सकता है। हैरत की बात है कि सीमांत जिले के किसी भी सरकारी अस्पताल में इस जांच की सुविधा नहीं है। इस जांच के लिए रेडियोलॉजी में डिग्रीधारी विशेषज्ञ की तैनाती जरूरी है।

सिर्फ जिला अस्पताल में ही एक चिकित्सक को रेडियोलॉजी का छह माह का प्रशिक्षण देकर तैनात किया गया है जिसके भरोसे जिले की सभी गर्भवतियों का अल्ट्रासाउंड हो रहा है।

हर रोज 60 से 70 गर्भवतियां अल्ट्रासाउंड के लिए जिला अस्पताल पहुंचती हैं। इनमें से 15 से 20 गर्भवतियों को लेवल-टू जांच की जरूरत होती है। विशेषज्ञ और आधुनिक मशीन न होने से इन्हें हायर सेंटर रेफर करना अस्पताल प्रबंधन की मजबूरी बन जाता है।

नियमित रेडियोलॉजिस्ट की तैनाती करना बना चुनौती

स्वास्थ्य विभाग ने किसी तरह लेवल-टू जांच के लिए आधुनिक अल्ट्रासाउंड मशीन की व्यवस्था की तो उसे इसके लिए बेहद जरूरी प्रशिक्षित रेडियोलॉजिस्ट की भी तैनाती करनी होगी। जिले में एक साल से नियमित रेडियोलॉजिस्ट की तैनाती नहीं हो सकी है। बीते दिनों सेवा विस्तार के जरिये एक विशेषज्ञ रेडियोलॉजिस्ट को जिला अस्पताल में नियुक्ति मिली थी। उनकी भी स्वास्थ्य कारणों से हल्द्वानी में तैनाती कर दी गई है। नियमित रेडियोलॉजिस्ट की तैनाती में स्वास्थ्य विभाग के पसीने छूट रहे हैं। ऐसे में लेवल-टू जांच की सुविधा गर्भवतियों को उपलब्ध कराना विभाग के लिए चुनौती बना हुआ है।

सशक्त और स्वावलंबी बनें महिलाएं : सुबुही खान

देहरादून। जस्सोवाला स्थित विमला देवी मेमोरियल शिक्षा निकेतन स्कूल में सीमा जागरण मंच की ओर से गोष्ठी का आयोजन किया गया। सुप्रीम कोर्ट की अधिवक्ता सुबुही खान ने कहा कि महिलाओं को मजबूत और स्वावलंबी बनना चाहिए।महिलाओं के आत्म निर्भर बनने से समाज को एक नई दिशा मिलेगी। जबतक महिलाएं सशक्त नहीं होंगी तब तक वह समाज की मुख्य धारा में शामिल नहीं हो सकेंगी इसलिए उन्हें अपने भविष्य को बनाने के लिए आगे बढ़ना चाहिए। सीमा जागरण मंच के आशीष वाजपेयी ने कहा कि सीमांत क्षेत्रों में जल, जंगल और जमीन की सुरक्षा के साथ रिवर्स पलायन और आत्मनिर्भरता आदि के लिए मंच कार्य कर रहा है। सीमांत क्षेत्रों की सुरक्षा की जिम्मेदारी उत्तराखंड के प्रत्येक नागरिक को निभानी चाहिए।

वर्तमान चुनौतियों से निपटने का उपाय मूल्यपरक शिक्षाः प्रो. पांडेय

रानीखेत (अल्मोड़ा)। राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रानीखेत में नव शैक्षिक सत्र के बीए, बीएससी व बीकॉम प्रथम वर्ष के छात्रों के लिए अधिष्ठापन कार्यक्रम (इंडक्शन प्रोग्राम) का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में छात्रों को महाविद्यालय की संरचना, सुविधाओं व विभिन्न योजनाओं से परिचित कराया गया।

कार्यक्रम में प्राचार्य प्रो. पुष्पेश पांडेय ने छात्रों को अनुशासन, स्वच्छता और नियमित उपस्थिति के लिए प्रेरित करते हुए कहा कि मूल्यपरक शिक्षा ही आज की चुनौतियों से लड़ने का रास्ता है। डॉ. जीएस रावत ने नई शिक्षा नीति तहत मेजर माइनर विषयों और सेमेस्टर प्रणाली की जानकारी दी। डॉ. नमिता मिश्रा ने मुख्यमंत्री उच्च शिक्षा प्रोत्साहन छात्रवृत्ति योजना के लाभ और योग्यता बताई। डॉ. राहुल चंद्रा ने देवभूमि उद्यमिता योजना की जानकारी साझा की।

एनसीसी प्रकोष्ठ के ले. डॉ. शंकर कुमार, एनएसएस के डॉ. सत्यमित्र, रेडक्रॉस की डॉ. कमला और क्रीड़ा विभाग की डॉ. रुचि शाह ने छात्र सहभागिता के अवसरों की जानकारी दी। इससे पहले महाविद्यालय के पूर्व छात्र और नव निर्वाचित जिला पंचायत सदस्य हिमांशु कुमार और प्रदीप कुमार का स्वागत किया गया। संचालन डॉ. बबीता कांडपाल ने किया गया।

टपकती छत, टूटी दीवारें, इनको स्कूल कैसे पुकारें

बरसात में स्कूल की छत से पानी का टपकना आम बात हो गई है। इन भवनों का ध्वस्तीकरण कर दो नये कक्ष बनाए जा रहे हैं।

-पूरन चंद्र पांडे, प्रभारी प्रधानाध्यापक

विद्यालय का ध्वस्तीकरण किया जाएगा इसके बाद नये कमरों का निर्माण किया जाएगा। विद्यालय में पढ़ने वाले छात्र-छात्राओं को कोई दिक्कत न हो इसका पूरा ध्यान रखा जा रहा है।

-अत्रेश स्याना , सीईओ अल्मोड़ा

जागेश्वर (अल्मोड़ा)। सरकारी रिकॉर्ड में यह एक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय है लेकिन जमीनी हकीकत कुछ और ही कहानी कहती है। यहां 62 छात्र-छात्राएं हर रोज खतरे के साये में पढ़ाई करने को मजबूर हैं। टपकती छतों के नीचे, दरकी हुई दीवारों के बीच भविष्य के सपने बुने जा रहे हैं।

राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय जागेश्वर की छत वर्ष 2013 से टपकते-टपकते अब दीवारों को भी खोखला कर चुकी है। बरसात आते ही शिक्षक कक्षाओं को बरामदे में शिफ्ट करने को मजबूर हो जाते हैं। माता-पिता बार-बार गुहार लगा चुके हैं लेकिन सुनवाई अब तक नहीं हुई है। इस स्कूल का हाल इतना बुरा है कि वहां कंप्यूटर और फर्नीचर को खुद शिक्षक प्लास्टिक से ढंककर बचाते हैं। चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी नहीं है। इससे सफाई व्यवस्था चरमराई हुई है। प्रधानाचार्य का पद भी सालों से खाली पड़ा है। सरकार की योजनाएं कागजों पर हैं मगर जमीनी हकीकत यह है कि बच्चे हर दिन जान जोखिम में डालकर स्कूल जाते हैं।

प्रधानाचार्य का पद भी खाली

राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय जागेश्वर प्रधानाचार्य का पद लंबे समय से खाली चल रहा है। इससे शिक्षण के साथ-साथ अन्य कार्य भी प्रभावित हो रहे हैं।

विद्यालय में चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी के न होने से सफाई व्यवस्था भी प्रभावित हो रही है। लोगों ने शीघ्र व्यवस्थाओं में सुधार करने की मांग की है।

डीएम के निर्देश के बाद भी नहीं बन सका टिनशेड

विद्यालय की बदहाली को ठीक करने के लिए कुछ समय पूर्व अभिभावकों और स्थानीय लोगों के शिष्टमंडल ने डीएम आलोक कुमार पांडे से मुलाकात की थी।

डीएम ने तुरंत आपदा मद से सात लाख रुपये स्वीकृत किए थे। इसके बाद आरईएस के जेई प्रदीप बिष्ट ने विद्यालय पहुंचकर टिनशेड बनाने की बात कही थी जो अब तक नहीं बन पाया है। सवाल है कि जब तक नया भवन बनेगा तब तक बच्चों की सुरक्षा कौन सुनिश्चित करेगा?

बचपन का खेल खो-खो

उत्कृष्ट व्यवस्था के छेद से टपक रहीं बदइंतजामी की बूंदें

- 12 वर्ष से टपक रही है राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय जागेश्वर की छत
- 62 छात्र-छात्राएं जर्जर स्कूल भवन में पढ़ने के लिए हैं मजबूर

द्वाराहाट (अल्मोड़ा)। उत्कृष्ट का तमगा मिल गया लेकिन द्वाराहाट के अटल उत्कृष्ट जीआईसी के मर्ज को इलाज नहीं मिला। विद्यालय की टिन की छत पर जगह-जगह छेद हो गए हैं। बारिश में छत से पानी टपक कर कक्षाओं में घुस जाता है। इससे वहां पढ़ाई करना मुश्किल हो जाता है। विद्यालय की जर्जर स्थिति 380 बच्चों की जान के लिए खतरा बन चुकी है। अटल उत्कृष्ट राजकीय इंटर कॉलेज रानीखेत मोटर मार्ग पर द्वाराहाट से दो किमी दूर है। वर्ष 1947 में स्थापित यह विद्यालय 1971-72 में इंटर कॉलेज में उच्चीकृत हुआ। हाल ही में इसे अटल उत्कृष्ट विद्यालय का दर्जा भी मिल गया। अब जरा इसके हालात देखिए। कक्षा 6, 7, 8 और 11-अ के कक्षों की छतें बेहद खराब स्थिति में हैं। दीवारों में दरारें आ चुकी हैं। विद्यालय सभागार की छत भी जर्जर है। यहां पढ़ने वाले 12वीं के विद्यार्थियों को भी पढ़ते समय डर लगा रहता है। छात्र पढ़ने से ज्यादा खतरे की चिंता और चर्चा करते हैं। विद्यालय के प्रधानाचार्य का आवास भी दयनीय स्थिति में है। यहां भी छत से पानी टपकता रहता है।

घंटो इंतजार के बाद भी नहीं मिल पा रहा राशन

ऊधम सिंह नगर , दिनेशपुर। नगर के राशन कार्ड धारकों को तकनीकी खामियों के चलते सरकारी सस्ते गल्ले की दुकानों से राशन लेने में खासी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। दो दिन से सर्वर डाउन है, ऐसे में लोग घंटों लाइनों में इंतजार करने के बाद बिना राशन लिए घर जाने को मजबूर हो रहे है। नये नियम के चलते वर्तमान में राशनकार्ड धारकों को बॉयोमेट्रिक प्रणाली के तहत राशन बांटा जा रहा है। बृहस्पतिवार को भी वार्ड चार और एक में राशन की दुकान में लंबी कतारों में उपभोक्ता नजर आए। धीमे नेटवर्क के कारण लोगों को खासी परेशानी हुई। विक्रेता के यहां उचित व्यवस्था न होने से भी लोगों में रोष दिखा। राशन डीलर दिलीप सिंह का कहना है कि सर्वर डाउन के कारण परेशानी हो रही है। सभी को राशन देने का प्रयास किया जा रहा है। उधर, उपभोक्ताओं ने रोष जताते हुए कहा कि सरकार की नई तकनीकी वितरण प्रणाली से उन्हें राहत के बजाए पहले से अधिक परेशानी उठानी पड़ रही है।

डिग्री कॉलेज में हुई राखी प्रतियोगिता

देहरादून, डोईवाला। शहीद दुर्गामल्ल पीजी कॉलेज में शुक्रवार को आजादी का अमृत महोत्सव के तहत हर घर तिरंगा कार्यक्रम आयोजित किया गया। गृह विज्ञान विभाग की ओर से धागे से तिरंगा बुनाई कर राखी प्रतियोगिता हुई। जिसमें गृह विज्ञान विभाग की छात्राओं ने हिस्सा लिया। शनिवार को आयोजित किए गए कार्यक्रम में कॉलेज प्राचार्य डॉ. डीपी भट्ट ने कपर्व की जानकारी दी। विभाग प्रभारी डॉ. प्रभा बिष्ट ने बुनाई के परंपरागत महत्व पर प्रकाश डाला। निर्णायक मंडल में रही डॉ. अंजलि वर्मा और डॉ. कामना लोहनी ने प्रतियोगिता में नितेश को प्रथम, किरण को द्वितीय और साहिबा को तृतीय स्थान दिया।

हर साल राज्य में आ रहीं औसतन दो हजार आपदाएं, नौ साल में दिए इतने जख्म

देहरादून। राज्य में औसतन हर साल दो हजार से अधिक प्राकृतिक आपदाएं आ रही हैं। प्रदेश में नौ साल में 18464 आपदाओं ने जख्म दिए हैं। अतिवृष्टि- त्वरित बाढ़ से लेकर बादल फटने जैसी घटनाएं हुई हैं। जिसमें जानमाल का भारी नुकसान हुआ है।आपदा प्रबंधन विभाग राज्य में सड़क दुर्घटना, आग, भूस्खलन, भूकंप, बाढ़, कीट आक्रमण, हिमस्खलन, अतिवृष्टि- त्वरित बाढ़, व्रजपात, ओलावृष्टि, आंधी तूफान, डूबना, बह जाना, जंगली पशुओं का हमला, बादल फटना, वनाग्नि, बीमारी फैलना, विद्युत करंट, वनाग्नि की घटनाओं का विवरण तैयार करता है। इन घटनाओं में मृत्यु, घायल, लापता होने की सूचना एकत्र की जाती है। इसके अलावा मकानों के आंशिक, पूरी तरह क्षतिग्रस्त होने का रिकार्ड रखा जाता है। आपदा प्रबंधन विभाग के वर्ष 2015 से 2024 तक के आंकड़े बताते हैं कि हर साल औसतन 2051 आपदाएं आ रही हैं।

राज्य में घटनाएं

अतिवृष्टि-बाढ़	12758
भूस्खलन	4654
आंधी तूफान	634
वज्रपात	259
हिमस्खलन	92
बादल फटना	67

इसमें सबसे अधिक अतिवृष्टि- त्वरित बाढ़ से लोग प्रभावित हो रहे हैं, जिसकी 12758 घटनाएं हुई हैं। इसके अलावा भूस्खलन भी चुनौती बना है। चार हजार से अधिक भूस्खलन की घटनाएं विभिन्न जिलों में हुईं। आपदा के बादल भी 67 बार फट चुके हैं। सबसे अधिक बादल फटने की घटना पौड़ी जिले में हुई हैं।

उत्तरकाशी में 1525 घटनाएं हुई

उत्तरकाशी में नौ साल में भूस्खलन, अतिवृष्टि-त्वरित बाढ़, हिमस्खलन, डूबना- बहजाना, बादल फटना जैसी आपदाओं की बात करें तो 1525 घटनाएं हुई हैं। इस अवधि में केवल एक बार जिले में बादल फटने की घटना रिपोर्ट हुई है। प्राकृतिक आपदाओं के प्रभावों को कम करने के लिए प्रयास किया जाता है। जहां पर भूस्खलन हुआ है, वहां पर उपचार का काम किया गया है। इसके अलावा अध्ययन भी कराया गया है। -विनोद कुमार सुमन, सचिव आपदा प्रबंधन एवं पुनर्वास

हजारों मकान हो गए ध्वस्त

कुदरत ने रौद्र रूप दिखाया तो लोग के आशियाने भी नहीं बचे। वर्ष-2015 से 2024 के बीच में एक दो नहीं बल्कि 3667 पक्के और कच्चे मकान पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गए। पक्के 9556 को आंशिक नुकसान पहुंचा। इसके अलावा 5390 कच्चे मकानों को आंशिक रूप से क्षतिग्रस्त हुए।

बच्चों ने थाना प्रभारी की कलाई पर बांधा रक्षा सूत्र खिलाई मिठाई

गोरखपुर। फन एंड लर्न स्कूल के बच्चों ने शुक्रवार को थाना तिवारीपुर के कर्मियों के साथ रक्षाबंधन का त्योहार मनाया गया। बच्चों ने थाना प्रभारी गौरव कुमार वर्मा को रक्षा सूत्र बांध कर उन्हें मिठाई खिलायी। वहीं, बच्चों ने भी स्वयं बनायी राखी जवानों को बांधा। कार्यक्रम में प्राचार्य ने कहा कि पुलिस के जवान हमारी और हमारे समाज व संपत्तियों की सुरक्षा करते हैं। ये जवान अपने घर-परिवार से दूर रह कर अपने कार्य में लगे रहते हैं। इसलिए जरूरी है कि पर्व-त्योहारों में हम उन्हें अपने घर-परिवार की कमी महसूस न होने दें वही थाना अध्यक्ष ने सभी बच्चों को आशीर्वाद दिया।

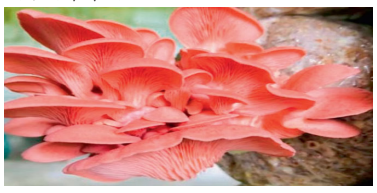

खुंब निदेशालय चंबाघाट में नई किस्म ईजाद
सात दिन में तैयार होगी अब मशरूम

शिमला। देश में अब मशरूम महज सात दिन में तैयार हो जाएगी। खुंब निदेशालय चंबाघाट के वैज्ञानिकों ने गुलाबी ढींगरी प्रजाति ईजाद की है, जो हफ्ते में फसल दे देगी। यह खुलासा मशरूम निदेशालय चंबाघाट में इंडियन मशरूम कॉन्फ्रेंस के दौरान निदेशालय के वैज्ञानिक डॉ. अनिल कुमार ने किया। कॉन्फ्रेंस में देश से लगभग 151 वैज्ञानिक, विद्यार्थी और मशरूम उत्पादक शामिल हुए। कॉन्फ्रेंस में कई शोध पत्रों पर चर्चा की। वैज्ञानिक डॉ. अनिल कुमार ने बताया कि गुलाबी ढींगरी की नई किस्म प्लीयूरोटस जेमोवार का सफल शोध हुआ है। इसकी फसल मात्र सात दिन में तैयार हो जाएगी। इसमें कई औषधीय गुण भी हैं। खासतौर पर लोवास्टैटिन नामक एक यौगिक मिला है जो कोलेस्ट्रॉल कम करता है। इससे अब मशरूम उत्पादकों के साथ-साथ इसे खाने के शौकीन लोगों को फायदा मिलेगा। जल्द ही यह किस्म बाजार में उपलब्ध होगी। किसानों को भी इसका बीज मुहैया करवाया जाएगा।

विशेष साउंड हीलिंग सत्र में दिए गए स्वस्थ रहने के टिप्स

शिमला। रोटरी क्लब शिमला की ओर से गत मंगलवार को हिमाचल अस्पताल ऑफ मेंटल हेल्थ एंड रिहेबिलिटेशन (मेंटल हॉस्पीटल) बालूगंज में विशेष साउंड हीलिंग सत्र का आयोजन किया गया। इसमें मानसिक रूप से स्वस्थ रहने के टिप्स दिए गए। मानसिक स्वास्थ्य और समग्र कल्याण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से आयोजित यह सत्र प्रमाणित साउंड हीलिंग ट्रेनर रुचिका अनेजा ने संचालित किया। इसमें थेरैप्यूटिक सिंगिंग बाउल्स, गोंग्स और अन्य वाइब्रेशनल इंस्ट्रूमेंट्स के माध्यम से प्रतिभागियों को मानसिक शांति, विश्राम और आंतरिक संतुलन का अनुभव करवाया गया। इस अनूठे सत्र से करीब 20 रोगियों ने लाभ प्राप्त किया। अंत में मरीजों को एक्वागार्ड, फल, जरूरी दवाइयां, सेनेटरी पैड और डाइपर्स भेंट किए गए। इस अवसर पर रोटरी क्लब शिमला के अध्यक्ष करण बंबा, सचिव डॉ. संदीप सौहटा, पूर्व अध्यक्ष अमित पाल सूद, करण शर्मा, रोटरी पार्टनर और अंकिता बंबा मौजूद रहीं।

पर्यावरण संरक्षण में पौधरोपण की महत्वपूर्ण भूमिका : एसडीएम

पालमपुर (कांगड़ा)। उपमंडल प्रशासन पालमपुर के सौजन्य से वीरवार को संयुक्त कार्यालय परिसर और कृषि विवि पालमपुर में एबीवीपी ने पौधरोपण कार्यक्रम का आयोजन किया। एसडीएम पालमपुर नेत्रा मेती ने सजावटी पौधा रोपित कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। एसडीएम ने कहा कि पर्यावरण संतुलन बनाए रखने में पौधरोपण की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। उन्होंने कहा कि ऐसे प्रयास न केवल क्षेत्र को हरियाली प्रदान करते हैं, बल्कि स्वच्छ और स्वस्थ वातावरण सुनिश्चित करने में भी सहायक होते हैं। तहसीलदार साजन बग्गा, नायब तहसीलदार अमृतपाल, वन परिक्षेत्र अधिकारी आदित्य सिंह सहित एसडीएम कार्यालय के कर्मचारियों ने भी विभिन्न प्रजातियों के सजावटी और फलदार पौधे रोपित किए। वहीं कृषि विवि में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद एवं विकासार्थ विद्यार्थी ने विश्वविद्यालय के जैविक कृषि एवं प्राकृतिक खेती विभाग में पौधरोपण किया। कार्यक्रम में कुलपति ने बतौर मुख्यातिथि और परिषद की जिला विस्तारक अर्चना विशिष्ठ अतिथि एवं विभागाध्यक्ष डॉ. जनार्दन सिंह मौजूद रहे।

एक साथ पांच डॉक्टरों का तबादला सेहत से खिलवाड़ : प्रवीण

पालमपुर (कांगड़ा)। पूर्व विधायक प्रवीण कुमार ने कहा कि नागरिक अस्पताल पालमपुर से एक साथ आधा दर्जन डॉक्टरों के हाई स्टडी पर जाने के आदेश जारी करने से पहले स्वास्थ्य मंत्री व विभाग के मुखिया को यहां वैकल्पिक व्यवस्था करनी चाहिए थी। उन्होंने कहा कि इस तरह के व्यवस्था परिवर्तन के चलते पूरे अस्पताल की ही व्यवस्था चरमरा गई है। हालांकि, इस घटना को डॉक्टरों के तबादले से जोड़ कर नहीं देखना चाहिए, बल्कि ये इनके हाई स्टडी पर जाने के आदेश इनके उज्ज्वल भविष्य के साथ जुड़े हैं। पूर्व विधायक ने कहा कि नागरिक अस्पताल पालमपुर की ओपीडी जोनल अस्पताल धर्मशाला से ज्यादा है। एक साथ महिला रोग, शिशु, हड्डी, चमड़ी और एनेस्थीसिया विशेषज्ञों के एक साथ चले जाने से तमाम अस्पताल की व्यवस्था बुरी तरह प्रभावित होकर रह गई है। उन्होंने कहा कि चिकित्सकों के ये तबादले रोगियों की सेहत के साथ खिलवाड़ है।

विनायक चतुर्थी के तैयारियों में जुंटे कारीगर

बच्चियों ने सीएम योगी के साथ मनाया रक्षाबंधन

लोकभवन में आयोजिम कार्यक्रम के दौरान सीएम योगी आदित्यनाथ ने बच्चियों के साथ रक्षाबंधन मनाया। इस दौरान बच्चियां उन्हें तिलक भी करती दिखाई दीं।

डॉ. कंगना यादव की पुस्तक का हुआ विमोचन

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शुक्रवार को सीईआरटी एंड श्रीराम ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस की प्रबंध निदेशक डॉ. कंगना यादव की पुस्तक आधुनिकता की आधारशिला भारत का विमोचन किया। लखनऊ में आयोजित एक गरिमामय समारोह में मुख्यमंत्री के कर कमलों से इस पुस्तक का लोकार्पण हुआ, जिसमें उन्होंने इस रचना को नई पीढ़ी के लिए प्रेरणादायी बताया। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा, यह पुस्तक हमारी युवा पीढ़ी के लिए एक नई प्रेरणा का स्रोत बनेगी। यह रचना भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और आधुनिकता के बीच एक सेतु का कार्य करेगी। उन्होंने पुस्तक की लेखिका की रचनात्मकता और दूरदर्शिता की सराहना की।

भाई बहन के प्रेम को वंदन

वंदन ऐसे प्रेम को,
जिस जैसा नहीं है दूजा।
भाई बहन का प्रेम है ऐसा,
जैसे हो कोई अजूबा।
भाई बहन जो नोंक -झोंक,
किया करते थे दिन रैन।
एक दूजे से मिलने को,
अब रहते हैं बेचैन।
आये बहन पर आंच,
भैया दुनिया से लड़ जाए।
भाई पर जो आए खतरा,
बहन चट्टान सी अड़ जाए।
भाई दूज और रक्षाबंधन,
दोनों पावन है त्यौहार।
हर साल बढ़ता जाता,
इससे भाई बहन का प्यार।
दोनों का है प्रेम अनोखा,
जिसका आदि न अंत।
वंदन इनके प्रेम को,
जो रहेगा अनादि अनंत।

सोनल सिंह
कोलिहापुरी, दुर्ग, छत्तीसगढ़

ना बहन रोए, ना बहू

रिश्तों में मोहब्बत का दिया जलना चाहिए,
ना बहन रोए, ना बहू को तन्हा रहना चाहिए।
जिस घर में बेटियों को मिले ताज सा मान,
उस घर में बहुओं को भी मुकुट मिलना चाहिए।
रिश्तों में तराजू बराबर रहना चाहिए,
ना कोई भारी, ना कोई हल्का होना चाहिए।
जब मन बँटते हैं तो घर भी बिखर जाते हैं,
दिल से दिल की राह को जुड़ना चाहिए।
ना बहनों को गलत समझो, ना बहुओं को कम,
हर रिश्ते को अपना अपनापन देना चाहिए।
दिल अब कहे, नफरत की हवा रुक जाए,
'सौरभ' प्यार का दीप हमेशा जलना चाहिए।

- प्रियंका सौरभ

पुस्तक विमोचन

गोरखपुर। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गत दिनों शनिवार को गोरखनाथ मंदिर के बैठक कक्ष में ए.डी.जी. गोरखपुर जोन अशोक मुथा जैन की पुस्तक रिवर ऑफ थॉट-। का विमोचन किया। उन्होंने लेखक को इस रचनात्मक कार्य के लिए शुभकामनाएं देते हुए कहा कि साहित्यिक अभिव्यक्ति विचारों को गहराई देने और समजा को दिशा देने का महत्वपूर्ण माध्यम है। अपनी स्वलिखित पुस्तक के विषय में विचार व्यक्त करते हुए लेखक अशोक मुथा जैन ने कहा कि पुस्तक में उनके जीवन अनुभवों, विचारों और समाज, प्रकृति और मानव व्यवहार पर आधारित आलेख शामिल हैं। यह पुस्तक पाठकों को सकारात्मक सोच और आत्म चिंतन के लिए प्रेरित करेगी।

वैदिक मंत्रोच्चारण के बीच संपन्न हुआ श्रावणी उपाकर्म व सप्तर्षि पूजन

गोरखपुर। भारतीय विद्वत्त समिति एवं श्री गोरखनाथ संस्कृत विद्यापीठ पीठ के संयुक्त तत्वावधान में गत दिनों शनिवार को श्रावणी उपाकर्म एवं सप्तर्षि पूजन कार्यक्रम हुआ। गोरखनाथ मंदिर के भीम सरोवर पर सुबह 6 बजे से सभी यज्ञोपवीत धारियों नें वेद मंत्रों के साथ दशविध स्नान पूर्वक संपन्न किया । पुरोहित के रूप में आचार्य रंग नाथ त्रिपाठी ने तीर्थ प्रार्थना, आचमन, प्राणायाम, तथा महा संकल्प दिलाया। सभी ने अपने शरीर पर दही, दूध, गोमूत्र, गोबर पंचगव्य, तीर्थ की मिट्टी का लेपन कर स्नान किया। फिर कु चिड़चिड़ा आदि से मंत्रोच्चारण के साथ शरीर पर मार्जन व स्नान किया गया। यज्ञशाला में जाकर अपने गोत्र प्रवर्तक सप्त ऋषियों पूजन कर यज्ञोपवीत धारण किया।

अध्यक्षता करते हुए भारतीय विद्वत समिति के उपाध्यक्ष पंडित दयाशंकर मिश्र ने बताया कि अभी यज्ञोपवीतधारियों के लिए श्रावणी उपाकर्म आवश्यक है इससे आंतरिक एवं बाह्य शुद्धि होती है।

शास्त्रानुसार, शुद्ध शरीर से किया गया सभी कर्म सफल होता है। हम सभी को सनातनी परंपरानुसार श्रावणी उपाकर्म सभी साल भर के संचित समस्त पापों को समाप्त करता है। भारतीय विज्ञान समिति के महामंत्री डा. जोखन पाण्डेय ने कहा कि इस प्रकार के आयोजन हमारे भारतीय ऋषियों के द्वारा प्रवर्तित है। इसी दिन संस्कृत भाषा दिवस मनाया जाता है। संस्कृत समस्त भाषाओं की जननी है। मातृ भाषा ही नहीं बल्कि विविधता है। यह मनुष्यों में मनुष्यता प्रदान करती है। संस्कृत भाषा ही भारतीय संस्कृति की संवाहक है।

डेथ बेबी बॉर्न के विषय पर खामोशी क्यों ?

गोरखपुर। मृत शिशु जन्म दर विषय पर एम्स गोरखपुर के शोध ने चौंकाया ही नहीं बल्कि विचारने के लिए मजबूर भी किया। जन्म को वो लोग खुशियों के साथ मनाते हैं। लेकिन मृत शिशु के पैदा होने पर मौन रह जाते हैं। इस वजह से कारणों के विषय में कोई सटीक जानकारी नही मिलवाती और भविष्य में इसे रोकने के उपायों पर भी चर्चा नहीं हो पा रही। चिकित्सको की जागरूकता के कारण शहरी क्षेत्र में कुछ मृत्यु की रिपोर्ट की जाती है, लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में इस दिशा में उदासीनता हो पाई जाती है। एम्स गोरखपुर के शोध में यह पाया गया है कि- आंकड़ों में भले ही उत्तर प्रदेश में मृत शिशु जन्म दर कुछ राज्यों के मुकाबले कम हैं लेकिन 'बड़ी जनसंख्या इसे कुल मृत शिशु जन्म की संख्या में सबसे ऊपर रखती है।

प्रदेश के कई जिलों में मातृ एनीमिया, कुपोषण, और प्रसव पूर्व देखभाल की कमी के कारण लगातार मृत शिशु होने वाले स्थानों की भी शोध में पहचान की गई है। शोध का प्रकाशन द लेसेंट रीजनल हेला साउथ ईस्ट एशिया जर्नल में हुआ है। जब कोई शिशु गर्भावस्था के 28 सप्ताह पूरे होने के बाद में ही दम तोड़ देता है, उसका जन्म नहीं हो पाता तो उसे मृत शिशु जन्म (death baby born - डेथ बेबी बॉर्न) होता है। अधिकांशतः मामलों में रोकथाम संभव होती है। विश्व में जन्म के सर्वाधिक मामलों में भारत भी एक है। लेकिन यह मुद्दा मातृ शिशु स्वास्थ्य कार्यक्रमों में उपेक्षित रह जाता है। बताते चलें कि एम्स गोरखपुर के नेतृत्व में भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आई सी एम आर) और ग्लोबल हेल्थ इंश्योरेंस एडवोकेसी इंक्यूबेटर के साथ मिलकर देश में पहली बार जिला-स्तर पर मृत शिशु जन्म का स्थानिक विश्लेषण किया गया। इसके सिविल राजिस्ट्रेशन सिस्टम और राष्ट्रीय परिवार स्वास्था सर्वेक्षण के नतीजों को शामिल किया गया। जिलावार मृत शिशु जन्म, हाट स्पॉट की पहचान की गई और लड़कों व लड़कियों के मामलों का अलग-अलग विश्लेषण किया गया। मातृ सामाजिक-आर्थिक और स्वास्थ्य सेवाओं से संबंधों का आकलन किया गया।

स्वाधीनता संग्राम में गोरखपुर का योगदान

स्वाधीनता आंदोलन के इतिहास में गोरखपुर की भूमिका की 'चर्चा करते समय - डोहरिया कलां का नाम - अवश्य लिया जाएगा। 23 अगस्त 1942 को यहां के रण बांकुरों ने महात्मा गांधी के करो या मरो के नारे को अपनाते हुए अंग्रेजी सरकार के खिलाफ मोर्चा खोला। इस दिन नौ बीरों ने अपने सीने पर गोलियां खाईं और देश के लिए बलिदान हो गया।

श्रद्धा के साथ याद किये जाएंगे बलिदानी रणबांकुरे

9 अगस्त 1942 को महात्मा गांधी ने भारत छोड़ो आंदोलन का आधान किया। जोडोहरिया कलां तक पहुंचता है। वहां के स्वतंत्रता, पगियों ने भारत माता की जय का नारा लगाते हुए गें भाग लेने की तैयारी की 125 अगस्त को बड़ी संख्या में लोग एकत्र हुऐ तब उन्होंने अंग्रेजों भारत छोड़ो का नारा लगाया के तत्कालीन गोरखपुर के कलेक्टर एम एस मास के निर्देश पर पुलिस ने आंदोलन को रोकने का प्रयास किया। हालांकि लोग अपने अधिकारों के लिए डटे रहे। विरोध जब अधिकारियों के बस से बाहर हो गया तो वहां के थानेदार एनुल हक ने हथियारबंद पुलिस को मौके पर बुला लिया। पहले चेतावनी देकर आंदोलन को रोकने की कोशिश की। लेकिन जब मामला थमता नहीं देखा तो उसने लाठी चार्ज का आदेश दिया। इससे आंदोलन कारी उग्र हो गए। स्थिति बिगड़ने पर पुलिस ने गोलियां चलानी शुरू कर दीं जिससे 9 लोग मौके पर ही शहीद हो गए। और 25 अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए। इस घटना के बाद अंग्रेजी पुलिस ने पूरे डोहरिया कलां में आग लगा दो और गांव वालों पर अत्याचार किया। कई घर जल गए और लोग खाने के लिए तरस गए। इस घटना की सूचना से पूरा जिला हिल गया और पूर्वांचल में स्वतंत्रता का बिगुल बज गया। चंदु और विरोध शुरू होगया।

देश आजाद हुआ तो डोहरिया कलां का यह स्थल स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में दर्ज हो गया। आज यह स्मारक स्थल न केवल पूर्वांचल बल्कि पूरे देश के लिए स्वतंत्रता की लड़ाई का प्रतीक बन गया।

बहनों ने भाइयों से लिया रक्षा का संकल्प

गोरखपुर। श्रावण-पूर्णिमा पर गत शनिवार को रक्षा बंधन का पर्व हर्षोल्लास के साथ परंपरा 510 तरीके से मनाया गया। भाइयों की कलाई पर रक्षा सूत्रों व सोने चांदी की राखियों के रूप में बहनों का खाए उड़ता रहा। अनेक स्थलों पर फिल्मी गीतों की धुनों के बीच राखी बांधी गई। महिलाओं ने भी एक दूसरे की कलाई पर रक्षा सूत्र बंधन कर एक दूसरे को पर्व की बधाई दी रक्षा बंधन का सिलसिला प्रातः 8 बजे से शुरू हुआ। बहनों ने भाइयों तिलक लगाया उनकी आरती उतारी नेह की डोर कलाई पर सजाते हुए मुंह मीठा किया। कुछ बहनें भाइयों के घर तो कुछ भाइयों में बहन के घर पहुंच कर इस पवित्र बंधन से बंधे तथा उपहार देकर भाइयों ने बहनों की रक्षा का संकल्प लिया।

घूँघट की बगावत

10 अगस्त 2025

प्रत्येक रविवार को प्रकाशित
हिन्दी साप्ताहिक समाचार पत्र

4

रक्षाबंधन: क्या वास्तव में निभा रहे हैं भाई-बहन प्रेम और रक्षा का वादा?

रक्षाबंधन केवल राखी बांधने और गिफ्ट देने का त्योहार नहीं, बल्कि भाई-बहन के स्नेह, विश्वास और परस्पर सहयोग का प्रतीक है। आज यह पर्व सोशल मीडिया दिखावे और औपचारिकताओं में सिमटता जा रहा है। भाई-बहन सालभर दूर रहते हैं, पर एक दिन फोटो खिंचाकर ह्यरिश्ता निभानेह्ल का प्रमाण दे देते हैं। असली रक्षा तब है जब मुश्किल वक्त में दोनों एक-दूसरे का सहारा बनें, चाहे वह भावनात्मक हो या आर्थिक। त्योहार का अर्थ लाइक्स नहीं, बल्कि लाइफ में प्रेजेंस है। राखी का धागा केवल कलाई पर नहीं, दिल में भी बांधना जरूरी है। त्योहार भारत की सांस्कृतिक आत्मा का आईना हैं। वे केवल कैलेंडर में दर्ज तारीखें नहीं होते, बल्कि पीढ़ियों से जुड़ी भावनाओं, रिश्तों और सामाजिक बंधनों का जीवंत प्रतीक होते हैं। रक्षाबंधन भी ऐसा ही एक पर्व है, जो भाई-बहन के रिश्ते को स्नेह, सुरक्षा और विश्वास की डोर में बांधने का प्रतीक है। लेकिन सवाल यह है कि क्या हम आज वास्तव में इस पर्व के मूल भाव को निभा रहे हैं, या यह भी अन्य त्योहारों की तरह दिखावे और औपचारिकता के चकाचौंध में खो गया है?

परंपरा से वर्तमान तक की यात्रा

कभी रक्षाबंधन एक ऐसा अवसर था जब बहनें भाई के माथे पर तिलक लगाकर, राखी बांधकर उनसे जीवनभर सुरक्षा और सहयोग का वादा लेती थीं। यह सुरक्षा केवल शारीरिक खतरों से बचाने की नहीं, बल्कि जीवन की हर कठिनाई में साथ खड़े होने का आश्वासन था। भाई भी पूरे गर्व के साथ इस वादे को निभाते थे। यह रिश्ता घर के आंगन में पनपता, पत्रों में झलकता और जीवनभर निभता था। मगर आज, राखी बांधना एक ह्यफोटोजेनिकह्ल इवेंट बन गया है। सोशल मीडिया पर तस्वीरें डालना, महंगे गिफ्ट देना, ऑनलाइन राखी मंगवाना – यह सब असली भावना को छूने के बजाय उसे सतही बना रहा है। भाई-बहन के बीच संवाद घट रहा है, और रक्षा शब्द का दायरा भी सिमटता जा रहा है।

रक्षा का बदलता अर्थ

पुराने समय में बहनें केवल भाई पर निर्भर नहीं रहती थीं, लेकिन उन्हें पता था कि मुसीबत में भाई उनकी ढाल बनेगा। आज के समय में भाई-बहन दोनों ही अपनी-अपनी व्यस्त जिंदगी में इतने उलझ गए हैं कि अक्सर एक-दूसरे की समस्याओं से बेखबर रहते हैं। रक्षा का मतलब अब ह्यफिजिकल प्रोटेक्शनह्ल से ज्यादा ह्यफाइनेंशियल हेल्पह्ल या ह्याइमरजेंसी सपोर्टह्ल तक सीमित हो गया है। लेकिन यहां भी एक विडंबना है – जब बहन आर्थिक रूप से सक्षम होती है, तो अक्सर वह भाई की मदद करती है, पर यह भावना रक्षाबंधन के विमर्श में उतनी जगह नहीं पाती। हमारी संस्कृति में अभी भी रक्षा का जिम्मा एकतरफा तरीके से भाई पर डाल दिया जाता है, जबकि आधुनिक रिश्तों में सुरक्षा और सहयोग दोनों तरफ से होना चाहिए।

> रक्षाबंधन का मूल भाव यह था कि भाई-बहन एक-दूसरे की कमजोरी नहीं, बल्कि ताकत बनें। लेकिन आज संवेदनाओं का सूखा पड़ता जा रहा है। रिश्ते भले खून के हों, पर उनमें औपचारिकता और दूरी बढ़ रही है। शहरों में नौकरी, बिजनेस, और व्यक्तिगत प्राथमिकताओं के बीच पारिवारिक जुड़ाव कमजोर हो रहा है। यह स्थिति केवल रक्षाबंधन के लिए नहीं, बल्कि सभी पारिवारिक रिश्तों के लिए चिंता का विषय है।

दिखावे का दौर

सोशल मीडिया के दौर में त्योहार अब निजी अनुभव से ज्यादा सार्वजनिक प्रदर्शन बन गए हैं। राखी की तस्वीर, गिफ्ट का वीडियो, स्टेटस अपडेट – ये सब रिश्ते की असली आत्मा को दबा देते हैं। कई बार भाई-बहन सालभर बात नहीं करते, लेकिन राखी के दिन फोटो खिंचवा कर ऑनलाइन डाल देते हैं ताकि समाज को परफेक्ट रिलेशन का प्रमाण मिल जाए। यह दिखावा उस सच्चाई को ढक देता है कि कई बहनें घरेलू हिंसा, मानसिक उत्पीड़न या आर्थिक शोषण का शिकार होती हैं और भाई जानते हुए भी चुप रहते हैं। वहीं, कई भाई जीवन की कठिनाइयों में बहनों से भावनात्मक सहयोग चाहते हैं, लेकिन उन्हें भी केवल त्योहार वाले रिश्ते का जवाब मिलता है।

संवेदनाओं की कमी

रक्षाबंधन का मूल भाव यह था कि भाई-बहन एक-दूसरे की कमजोरी नहीं, बल्कि ताकत बनें। लेकिन आज संवेदनाओं का सूखा पड़ता जा रहा है। रिश्ते भले खून के हों, पर उनमें औपचारिकता और दूरी बढ़ रही है। शहरों में नौकरी, बिजनेस, और व्यक्तिगत प्राथमिकताओं के बीच पारिवारिक जुड़ाव कमजोर हो रहा है। यह स्थिति केवल रक्षाबंधन के लिए नहीं, बल्कि सभी पारिवारिक रिश्तों के लिए चिंता का विषय है। अगर भाई-बहन का रिश्ता भी केवल एक दिन के उत्सव तक सीमित रह गया, तो आने वाले समय में यह त्योहार भी केवल ह्यफूल, मिठाई और फोटो का त्योहार बनकर रह जाएगा।

समानता का दृष्टिकोण

आज के समय में रक्षा का अर्थ केवल पुरुष की जिम्मेदारी नहीं हो सकता। बहनों को भी भाइयों के जीवन में समान भूमिका निभानी चाहिए – चाहे वह भावनात्मक समर्थन हो, सलाह हो या मुश्किल समय में कंधा देने की बात। भाई-बहन का रिश्ता तभी सार्थक है जब उसमें बराबरी और परस्पर सहयोग हो। अगर किसी भाई पर बहन की शादी, पढ़ाई या करियर का बोझ आता है, तो बहन पर भी भाई की जरूरतों को समझने और मदद करने की जिम्मेदारी आती है। यही संतुलन इस रिश्ते को आधुनिक समय में भी प्रासंगिक बनाए रख सकता है।

समाधान की दिशा

हमें यह समझना होगा कि त्योहार का असली मूल्य उसकी रस्मों में नहीं, बल्कि उसके पीछे छिपी भावनाओं में है। भाई-बहन दोनों को अपने रिश्ते की नींव में विश्वास और सहयोग रखना चाहिए, न कि केवल गिफ्ट और फोटो के सहारे इसे निभाना चाहिए। सालभर एक-दूसरे से बात करना, छोटी-छोटी खुशियां और परेशानियां साझा करना ही रिश्ते को जिंदा रखता है। एक फोन कॉल, एक मुलाकात, या मुश्किल वक्त में साथ खड़े होने का भाव, राखी के धागे से कहीं ज्यादा मजबूत डोर बनाता है। सोशल मीडिया पर दिखाने के बजाय असल में निभाना ज्यादा जरूरी है। राखी का मतलब लाइक्स नहीं, बल्कि लाइफ में प्रेजेंस है। भाई-बहन दोनों को एक-दूसरे की सुरक्षा, सम्मान और जरूरत का ख्याल रखना चाहिए। एकतरफा जिम्मेदारी की सोच बदलनी होगी। राखी की रस्म निभाते हुए भी रिश्ते में आधुनिक मूल्यों – जैसे समानता, स्वतंत्रता और व्यक्तिगत सम्मान – को जगह देना जरूरी है।

रक्षाबंधन का असली वादा

रक्षाबंधन केवल एक त्योहार नहीं, बल्कि रिश्तों की असली परीक्षा है। यह दिन हमें याद दिलाता है कि हमारे जीवन में ऐसे लोग हैं जिनसे हम बिना किसी स्वार्थ के जुड़े हैं। लेकिन अगर यह जुड़ाव केवल कैलेंडर की तारीख पर ही जीवित होता है, तो इसका असली महत्व खत्म हो जाएगा। आज जरूरत है कि हम राखी के धागे को केवल कलाई पर नहीं, बल्कि दिल में भी बांधें – ऐसा बंधन, जो साल के 365 दिन स्नेह, सम्मान और सुरक्षा के वादे को निभाए। तभी हम कह पाएंगे कि हम सच में भाई-बहन प्रेम और रक्षा का वादा निभा रहे हैं।

ताकि किसी की धार्मिक भावनाएं आहत ना हो.....

सोचिये सनातन में ऐसा क्या है कि धार्मिक स्थलों पर दिनों दिन भीड़ बढ़ती जा रही है, वो भी बेतहाशा तरीके से ? क्या जादू है कि कावड़ यात्रा के लिए करोड़ों की संख्या में दलित और पिछड़े सड़को पर महादेव का नारा गुंजाते है ! यज्ञ, पूजा-पाठ, अनुष्ठान, अखण्ड-कीर्तन पहले से कई गुना क्यों बढ़ गये हैं ? जबकि इसके उलट 'पौरोहित्य' कर्म कराने वाले ब्राह्मणों का संख्या घनत्व लगातार घटते जा रहा है। दशहरा,होली, दिवाली, रक्षाबंधन, अनंत-पूजा, तीज, जितिया, रामनवमी, जन्माष्टमी आदि में अधिक कमाई करने वालों की जातियाँ क्या है, ब्राह्मण या गैर ब्राह्मण ? हाल ही में संपन्न हुए कुम्भ मेले में प्रतिदिन हजारों-लाखों में कमाई करनेवाले लोग किस जाति के थे ? रामनवमी तो एक ऐसा पर्व है जिसमें हिन्दुओं से अधिक कमाई मुसलमानों की होती है। महावीरी झंडा सिलने वाले अनेकों मुस्लिम परिचितों को मैं देखता हूँ कि ये कैसे इस पर्व के इंतजार में रहते हैं। नवरात्री में चुनरी, दिवाली में बत्ती आदि का कारोबार अमूमन इन्हीं के जिम्मे होता है। आज ही मेरी बात एक मुस्लिम लड़के से हो रही थी। बात करने के दौरान उसने कहा कि बहन की शादी, बीवी के इलाज आदि में उसका परिवार बहुत कर्ज में डूब चुका है, जिसकी भरपाई के लिए वह गयाजी में लगने वाले पितृपक्ष मेले के इंतजार में है। उसने कहा कि पितृपक्ष मेले में 15 दिनों की मेरी कमाई लाख रुपए से ऊपर रहती है. ये लड़का वहाँ रजाई, गद्दा, तकिया आदि में रुई भरने का कार्य करता है। बहुत कम ही ब्राह्मण हैं जो दिल से चाहते हैं कि मेरे बच्चे इस पेशे में उतरें। आज जो ब्राह्मण इस पेशे में हैं भी उनमें से करीब 70% इसे मजे से कर भी रहे हैं।

ब्राह्मणों में ऐसे अनेकों उदाहरण मिल जाएंगे, जो अवसर प्राप्त होते ही इस पेशे को छोड़कर अन्य पेशे में चले गये। इसके उलट आपको विरले ही ऐसे उदाहरण मिलते हैं जो अन्य पेशे को छोड़कर इस पेशे में कदम रखे हों फिर भी सनातन अखंड है । इसलिए ये कहना कि मंदिर, यज्ञस्थल, धार्मिक मेले आदि ब्राह्मणों की कमाई के साधन हैं, मैं इससे बहुत ज्यादा इत्तेफाक नहीं रखता। मैंने अपने भारत भ्रमण के दौरान इस देश के अमूमन दो तिहाई के करीब बड़े धार्मिक स्थलों, मंदिरों आदि की यात्रा की है जहाँ अधिकतर के पुजारी गैर ब्राह्मण है।

इन मंदिरों व धार्मिक स्थलों में एक बात जो मैंने कॉमन पाया है, वो ये कि मंदिर के अंदर जितनी कमाई ब्राह्मण (पुजारी) नहीं करते, उससे कई गुना अधिक की कमाई मंदिरों के बाहर पिछड़ी जातियों से आने वाले लोग करते हैं। मंदिरों के बाहर हजारों दुकानें, होटल्स, ऑटो रिक्शा, टोटो, कैब, भोजनालय आदि चलाने वाले 70-80 प्रतिशत से अधिक लोग पिछड़ी जाति से ही आते हैं। मंदिरों के बाहर दुकान लगाकर कमाई करने वालों में मुसलमानों की संख्या भी ठीक-ठाक रहती है।

अभी श्रावणी मेला समाप्त हुआ है। इसमें ही आप देख लीजिये, काँवड़ यात्रा के मार्गों पर लाखों की कमाई करने वालों में किस जाति के लोग अधिक होते हैं ? अपने आस-पास के शिवालयों के बाहर लगने वाले मेलों से पैसे कमाने वालों में अधिकांश लोग ब्राह्मण हैं या गैर ब्राह्मण ? आपके गाँव-शहर में होने वाले यज्ञ में जो मेले लगते हैं, उसमें कमाई करने वाले 95% से अधिक लोग ब्राह्मण होते हैं या गैर ब्राह्मण ? कहने का लब्बो लुआब ये है कि इस देश की इकॉनमी का एक बहुत बड़ा जरिया 'धार्मिक पर्यटन' है।

ग्रामीण व छोटे शहरों के बाजारों की अर्थव्यवस्था तो टिकी ही हुई है पूजा-पाठ, यज्ञ, हवन, अनुष्ठान, तीज-त्यौहार, पर्व, मेले आदि पर इसलिए बिना जमीनी हकीकत का आंकलन किये ही ये कह देना कि धार्मिक स्थल, धार्मिक मेले, यज्ञ आदि ब्राह्मणों की कमाई का जरिया है, जातीय द्वेष, कुंठा और जलन के सिवाय कुछ भी नहीं है। और देश की सरकार नें मंदिरो में कॉरिडोर बनवाकर इस कमाई को और सुदृढ़ किया है।

पंकज सीबी मिश्रा
जौनपुर, यूपी

अलविदा रजिस्टर्ड डाक : एक युग की खामोश विदाई

एक सितंबर दो हजार पच्चीस को जब भारत डाक की रजिस्टर्ड डाक सेवा औपचारिक रूप से समाप्त कर दी जाएगी, तो संभवतः किसी समाचार पत्र के मुख्य पृष्ठ पर यह नहीं छपेगा, न ही किसी समाचार चैनल पर विशेष चर्चा होगी। यह समाचार जितना सामान्य प्रतीत होता है, उतना ही गहरा असर छोड़ता है — उस पीढ़ी पर, जिन्होंने वर्षों तक डाकिये की साइकिल की घंटी सुनकर अपने दिन की शुरूआत की। जिन्होंने पत्रों के माध्यम से रिश्तों को जिया और डाकघर की कतारों में खड़े होकर संवाद की प्रतीक्षा की।

रजिस्टर्ड डाक कोई साधारण सेवा नहीं थी। यह उन दिनों की गवाही थी जब हम कागज पर स्याही से अपने जज्बातों को उकेरा करते थे। जब एक लिफाफे में कई अनकही बातें, लंबा इंतजार और अनगिनत भावनाएँ समाहित होती थीं। जब एक पत्र, चाहे वह परिवार के किसी सदस्य का हो या सरकारी दस्तावेज, केवल कागज का टुकड़ा नहीं होता था, बल्कि विश्वास का प्रतीक होता था – कि यह जरूर पहुँचेगा, सही हाथों में, सही समय पर।

रजिस्टर्ड डाक वह सेतु था, जो गाँव को शहर से, माँ को बेटे से, प्रेमिका को प्रेमी से, और नागरिक को शासन से जोड़ता था। वह न केवल संवाद का माध्यम था, बल्कि संबंधों को सुरक्षित रखने वाला प्रहरी भी था। उसकी विशेषता यह थी कि वह खोता नहीं था, वह भटकता नहीं था। उसका पंजीकरण उसकी सुरक्षा थी, और उसकी प्राप्ति की पावती एक तरह का भावनात्मक संतोष। एक समय था जब डाकिया केवल संदेशवाहक नहीं, बल्कि घर का परिचित चेहरा होता था। उसकी आवाज, उसकी साइकिल की घंटी और उसकी झोली में छिपे लिफाफों का इंतजार हर किसी को रहता था। कोई सरकारी पत्र हो, किसी मामा जी की मनी ऑर्डर, किसी दूर बैठे बेटे का समाचार – सब कुछ रजिस्टर्ड डाक के माध्यम से पहुँचता था। और जब पत्र मिलता, तो उसे खोलने से पहले उसे छूकर महसूस किया जाता था – उसके कागज की मोटाई, उसके रंग की गहराई और उस पर लगी स्याही की गंध – सबमें अपनापन होता था। लेकिन अब समय बदल चुका है। तकनीकी प्रगति ने हमारे संवाद के तरीकों को पूरी तरह से बदल दिया है। आज मोबाइल फोन, त्वरित संदेश सेवाएँ, सामाजिक माध्यम, और अंतर्जाल ने पारंपरिक पत्र-व्यवस्था को लगभग समाप्त ही कर दिया है। अब किसी को इंतजार नहीं रहता, सब कुछ पल में भेजा और पल में प्राप्त किया जाता है। ऐसे समय में भारत डाक द्वारा रजिस्टर्ड डाक को औपचारिक रूप से बंद करने और उसे स्पीड डाक में समाहित करने का निर्णय, समयानुकूल और आवश्यक तो है, परंतु भावनात्मक रूप से पीड़ादायक भी।

स्पीड डाक, निस्संदेह आधुनिक आवश्यकताओं के अनुरूप एक बेहतर सेवा है। इसमें गति है, निगरानी है, तकनीकी दक्षता है। परन्तु उसमें वह आत्मीयता नहीं है जो रजिस्टर्ड डाक में थी। वह अपनापन, वह धीमा मगर विश्वसनीय संवाद, वह सादगी – अब इतिहास बन जाएगी।

रजिस्टर्ड डाक का अंत केवल एक सेवा का अंत नहीं है, यह एक युग का अंत है। वह युग जिसमें शब्दों को सहेजा जाता था, जिसमें उत्तर पाने के लिए दिन नहीं, सप्ताहों की प्रतीक्षा की जाती थी। जब एक उत्तर में प्रेम, सम्मान और भावनाओं की परतें होती थीं। आज हम भले ही एक क्लिक में संवाद कर सकते हैं, लेकिन उस संवाद में स्थायित्व और गहराई का अभाव है। हम संदेश तो भेजते हैं, पर भावनाएँ नहीं। हम पढ़ते तो हैं, पर समझते नहीं। रजिस्टर्ड डाक उस युग की अंतिम निशानी थी, जहाँ संवाद सिर्फ बात नहीं, एक भावना होता था।

हमारे पुराने संदूकों में आज भी ऐसी चिट्ठियाँ मिलती हैं – पीले पड़े कागज, स्याही से भरे अक्षर, किनारों पर समय की छाप और भीतर वह सब कुछ जो किसी समय अनमोल था। वे चिट्ठियाँ अब केवल स्मृति हैं, किंतु रजिस्टर्ड डाक ने उन्हें आज तक सुरक्षित पहुँचाया। यह उसकी सबसे बड़ी सफलता है – कि उसने शब्दों को अमर बना दिया। इस सेवा के बंद होने से एक भावात्मक सूत्र टूटेगा। यह वह सेवा थी, जिसने दूरी को भी एक बंधन बना दिया था। जिसने माँ के आँचल से बेटे तक, प्रेमिका की आँखों से प्रेमी तक, शिक्षक की सीख से छात्र तक – सबको जोड़ रखा था। अब स्पीड डाक आएगी – तेज, सुविधाजनक, आधुनिक। परंतु उसमें वह ठहराव नहीं होगा, वह धैर्य नहीं होगा, वह प्रतीक्षा नहीं होगी जो रजिस्टर्ड डाक को विशेष बनाती थी।

आज हम तकनीकी दृष्टि से जितने सक्षम हुए हैं, उतने ही भावनात्मक रूप से खोखले भी हो गए हैं। संवाद तो अब भी होते हैं, पर उनमें आत्मा नहीं होती। रजिस्टर्ड डाक केवल चिट्ठी नहीं थी, वह आत्मा का दस्तावेज थी। अब जब वह विदा ले रही है, तो यह केवल प्रशासनिक निर्णय नहीं है – यह हमारी सांस्कृतिक विरासत का एक पृष्ठ बंद होना है।

रजिस्टर्ड डाक, तुमने केवल पत्र नहीं पहुँचाए, तुमने रिश्ते पहुँचाए। तुमने हमें जोड़ना सिखाया – शब्दों से, भावनाओं से, प्रतीक्षा से, और विश्वास से। तुम भले ही अब औपचारिक रूप से बंद हो जाओ, परंतु हमारी यादों में, हमारे पुराने संदूकों में, हमारे दिलों में तुम सदा जीवित रहोगी।

आज जब हम तुम्हें विदाई दे रहे हैं, तो यह विदाई नहीं, एक प्रणाम है – उस युग को, उस सादगी को, उस धैर्य को, उस अपनापन को, जिसे तुमने वर्षों तक अपने कंधों पर ढोया। अब भले ही डाकघर बदल जाएँ, डाकिए डिजिटल हो जाएँ, पत्र इतिहास बन जाएँ – परंतु तुम, रजिस्टर्ड डाक, हमारे लिए सदा अमर रहोगी।

डॉ. प्रियंका सौरभ

स्वतंत्रता के बाद से देश में पर्यावरण विज्ञान की यात्रा

विजय गर्ग

स्वतंत्रता के बाद से भारत में पर्यावरण विज्ञान की यात्रा तेजी से विकास, प्राचीन पारिस्थितिक ज्ञान और पर्यावरण क्षरण की बढ़ती चेतना के जटिल परस्पर क्रिया से जूझ रहे राष्ट्र की एक आकर्षक कहानी है। इस यात्रा को मोटे तौर पर कई चरणों में विभाजित किया जा सकता है, प्रत्येक पर्यावरणीय मुद्दों के लिए एक अलग दृष्टिकोण की विशेषता है। 1.। प्रारंभिक वर्ष (1947 - 1970): पर्यावरण पर विकास तत्काल स्वतंत्रता के बाद के युग में, सरकार का प्राथमिक ध्यान आर्थिक विकास और गरीबी उन्मूलन पर था। प्रचलित दर्शन यह था कि अक्सर पर्यावरण की कीमत पर विकास राष्ट्रीय प्रगति के लिए आवश्यक था। पर्यावरणीय चिंताएं नीति प्रवचन का एक प्रमुख हिस्सा नहीं थीं। कानूनी ढांचा काफी हद तक ब्रिटिश औपनिवेशिक युग से एक कैरी-ओवर था, जिसमें 1927 के भारतीय वन अधिनियम जैसे कार्य थे। 2.। टर्निंग प्वाइंट: 1970 के दशक और पर्यावरण जागरूकता का उदय 1970 के दशक में भारत के पर्यावरण प्रक्षेपवक्र में एक महत्वपूर्ण बदलाव हुआ।

इस दशक में कई प्रमुख घटनाओं और घटनाक्रमों का संगम देखा गया।

वैश्विक प्रभाव: स्टॉकहोम में मानव पर्यावरण पर 1972 का संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन एक वाटरशेड क्षण था। इसने अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय एजेंडा में पर्यावरणीय मुद्दों को सबसे आगे बढ़ाया। भारत एक भागीदार था और सम्मेलन ने सरकार को राष्ट्रीय पर्यावरण नीति और योजना परिषद की स्थापना के लिए प्रेरित किया।

प्रमुख पर्यावरणीय आंदोलन: 1970 के दशक में शक्तिशाली जमीनी आंदोलनों का उद्भव हुआ जिसने पर्यावरण के मुद्दों को जनता के ध्यान में लाया।

चिपको आंदोलन (1973): उत्तराखंड के हिमालयी क्षेत्र में उत्पन्न, इस आंदोलन ने ग्रामीणों, विशेष रूप से महिलाओं, पेड़ों को गले लगाते हुए देखा ताकि उन्हें वाणिज्यिक यात्रियों द्वारा गिर जाने से रोका जा सके। यह समुदाय के नेतृत्व वाले वन संरक्षण का एक शक्तिशाली प्रतीक बन गया।

द साइलेंट वैली मूवमेंट (1970 के दशक के अंत में): इस आंदोलन ने केरल की साइलेंट वैली में एक पनबिजली परियोजना का सफलतापूर्वक विरोध किया, जिसमें नाजुक पारिस्थितिक तंत्र और जैव विविधता के संरक्षण के महत्व पर प्रकाश डाला गया।

विधायी परिवर्तन: इस नई जागरूकता ने विधायी गतिविधि की झड़ी लगा दी। 1972 का वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम कानून का एक ऐतिहासिक टुकड़ा था जो जंगली जानवरों, पक्षियों और पौधों की सुरक्षा के लिए प्रदान किया गया था। इसके बाद 1974 का जल (प्रदूषण की रोकथाम और नियंत्रण) अधिनियम, जो प्रदूषण को दूर करने वाला पहला व्यापक कानून था। 3। पर्यावरण शासन का संस्थागत रूप: 1980 का दशक 1980 के दशक में पर्यावरण ढांचे को और अधिक संस्थागत बनाने और मजबूत करने की अवधि थी।

भोपाल गैस त्रासदी (1984): इस औद्योगिक आपदा ने सख्त पर्यावरणीय नियमों और एक मजबूत प्रवर्तन तंत्र की तत्काल आवश्यकता के गंभीर अनुस्मारक के रूप में कार्य किया। इसने सरकार को और निर्णायक कार्रवाई करने के लिए प्रेरित किया।

पर्यावरण और वन मंत्रालय (1985): राष्ट्रीय पर्यावरण नीति और योजना परिषद को एक पूर्ण मंत्रालय, (अब पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय) में अपग्रेड किया गया था। इसने पर्यावरण संरक्षण को विनियमित करने और सुनिश्चित करने के लिए एक समर्पित प्रशासनिक निकाय की स्थापना की।

पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986: यह अधिनियम भोपाल त्रासदी का सीधा जवाब था। यह एक व्यापक कानून था जिसने केंद्र सरकार को पर्यावरण की रक्षा और सुधार करने और प्रदूषण को नियंत्रित करने और रोकने के लिए एक व्यापक ढांचा प्रदान किया।

संवैधानिक संशोधन: पर्यावरण संबंधी चिंताओं को 42 वें संशोधन (1976) के साथ संवैधानिक मंजूरी दी गई, जिसमें अनुच्छेद 48 ए (राज्य नीति के निर्देशक सिद्धांत) और अनुच्छेद 51-ए (जी) (मौलिक कर्तव्य) को जोड़ा गया, जिससे यह राज्य और पर्यावरण की रक्षा और सुधार के लिए प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य बन गया। 4। सतत विकास और सार्वजनिक भागीदारी का युग: 1990 और परे 1990 के दशक और नई सहस्राब्दी में, सतत विकास की अवधारणा के साथ पर्यावरणीय चिंताओं को एकीकृत करने की दिशा में ध्यान केंद्रित किया गया।

न्यायिक सक्रियता: न्यायपालिका ने पर्यावरण शासन में सक्रिय भूमिका निभानी शुरू की। एक महत्वपूर्ण क्षण 1991 में सुप्रीम कोर्ट का निर्देश था जिसने पर्यावरण अध्ययन को शिक्षा के सभी स्तरों पर एक अनिवार्य विषय बना दिया। यह निर्णय पर्यावरण वकील एम.सी. द्वारा जनहित याचिका (पीआईएल) का परिणाम था। मेहता।

नया विधान: 2000 के दशक में कई महत्वपूर्ण कानूनों को पारित किया गया, जिनमें शामिल हैं:

जैविक विविधता अधिनियम, 2002: जैव विविधता के संरक्षण के लिए, इसके घटकों के स्थायी उपयोग को बढ़ावा देना, और जैविक संसाधनों के उपयोग से उत्पन्न होने वाले लाभों का उचित और न्यायसंगत साझाकरण सुनिश्चित करना।

अनुसूचित जनजाति और अन्य पारंपरिक वन निवासी (वन अधिकारों की मान्यता) अधिनियम, 2006: वन-निवास समुदायों के अधिकारों और वन संरक्षण में उनकी भूमिका को स्वीकार किया।

नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (एनजीटी) (2010): एनजीटी को पर्यावरण संरक्षण और वनों और अन्य प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण से संबंधित मामलों को संभालने के लिए एक विशेष न्यायिक निकाय के रूप में स्थापित किया गया था। यह पर्यावरणीय मुद्दों के लिए त्वरित और प्रभावी न्याय प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। 5.। वर्तमान-दिन चुनौतियां और भविष्य की दिशा आज, देश में पर्यावरण विज्ञान और नीति विकसित होती रहती है। भारत सक्रिय रूप से वैश्विक जलवायु परिवर्तन पहल में लगा हुआ है और महत्वाकांक्षी नवीकरणीय ऊर्जा लक्ष्यों के लिए प्रतिबद्ध है। हालांकि, महत्वपूर्ण चुनौतियां बनी हुई हैं, जिनमें शामिल हैं:

वायु और जल प्रदूषण: शहरी और औद्योगिक प्रदूषण प्रमुख सार्वजनिक स्वास्थ्य चिंताएं हैं।

जैव विविधता हानि और आवास क्षरण: तेजी से शहरीकरण और बुनियादी ढांचे के विकास से भारत की समृद्ध जैव विविधता को खतरा है।

अपशिष्ट प्रबंधन: ठोस, प्लास्टिक और इलेक्ट्रॉनिक कचरे का प्रबंधन एक बढ़ती चुनौती है।

जलवायु परिवर्तन प्रभाव: देश जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के प्रति अत्यधिक संवेदनशील है, जैसे कि चरम मौसम की घटनाएं, समुद्र-स्तर में वृद्धि और खाद्य सुरक्षा मुद्दे। स्वतंत्रता के बाद से भारत में पर्यावरण विज्ञान की यात्रा एक गैर-मुद्दे से राष्ट्रीय नीति के केंद्रीय स्तंभ में बदल गई है, जो सार्वजनिक आंदोलनों, विधायी कार्रवाई और न्यायिक हस्तक्षेप के संयोजन से प्रेरित है। आगे के मार्ग के लिए अभिनव समाधान, सार्वजनिक जागरूकता और राष्ट्रीय विकास के सभी पहलुओं में पर्यावरणीय चिंताओं के एकीकरण पर निरंतर ध्यान देने की आवश्यकता है।

मलोट पंजाब -152107

इस बात में कोई दो राय नहीं कि बादल फटना एक प्र-ाकृतिक घटना है, जिस पर इंसानों का कोई जोर नहीं। लेकिन, यह भी एक उद्वेलित करने वाला तथ्य है कि जब पानी के निकलने के रास्तों, नालों-गदेरों के मुहानों पर कंक्रीट के बड़े-बड़े स्ट्रक्चर खड़े हो चुके हैं, तो फिर उन तमाम जगहों पर, जिन रास्तों से पानी को बहना था, आखिर वह कैसे निकलेगा। क्योंकि उन रास्तों पर तो प्रकृति प्रेमी इंसान बस चुका है। स्पष्ट है कि यह जानबूझकर आफत बुलाने जैसा है। इसी के चक्कर में भारी धन-जन की हानि झेलनी पड़ती है और आपदा आने के बाद प्रशासन का जो सिर दर्द बढ़ता है, वह अलग बात है। इसलिए समकालीन स्थिति-परिस्थितियों को बदलने की जरूरत है।

धराली गांव में आई प्राकृतिक आपदा से धधकते सवाल?

भारत वर्ष में विज्ञान और अध्यात्म का अद्भुत संगम देखने को मिलता है। बावजूद इसके ब्रेक के बाद यहां आने वाली प्राकृतिक आपदाओं के बारे में सटीक अनुमान लगा पाना अब भी एक बड़ी चुनौती बनी हुई है। एआई के अप्रत्याशित विकास के बावजूद शोधकर्ताओं की उदासीनता और लापरवाही से विषयगत सफलता अभी तक हासिल नहीं की जा सकी है। इसलिए सरकार, निजी उद्यमियों और शोधार्थियों को इस ओर ज्यादा ध्यान देने की जरूरत है। खासकर मौसम विज्ञान और पर्यावरण ज्योतिष के अनुसंधान कताओं को इस ओर ज्यादा फोकस करने की जरूरत है। इससे समय रहते ही हमें सटीक भविष्यवाणी करने में मदद मिलेगी और ऐसी आपदाओं के बाद होने वाली भारी धन-जन की हानि भी रोकने में मदद मिलेगी। और यदि ऐसा संभव हुआ तो यह भारत के लिए बहुत बड़ी उपलब्धि भी होगी।

बताते चलें कि उत्तराखंड राज्य के उत्तरकाशी जनपद के धराली गांव में आई अकस्मात बादल फटने जैसी आपदा प्रकृति और आये दिन बिगड़ते पारिस्थितिकी संतुलन की एक और गंभीर चेतावनी है। चूंकि पर्वतीय प्रदेशों में ऐसी चेतावनियों की एक लंबी श्रृंखला है, जो हमें चीख चीख कर यह बताती है कि पर्यावरण और विकास के बीच संतुलन साधने की कितनी जरूरत है? खासकर, देश के पहाड़ी राज्यों, यथा उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर, सिक्किम, अरुणाचल प्रदेश आदि पर्वतीय प्रदेशों को लेकर ऐसी नीति बननी चाहिए, जिससे पहाड़ और इंसानों के बीच चिरस्थायी संतुलन बना रहे। इसलिए यह सवाल उठता है कि आखिरकार कुदरत की चेतावनी को हमलोग कब समझेंगे? और सिर्फ समझेंगे ही नहीं, बल्कि उनके अनुरूप ही अपना अग्रगामी व्यवहार भी बदलेंगे।

यह ठीक है कि तकनीकी क्रांति और सूचना क्रांति से विकास में अप्रत्याशित गति आई है, लेकिन विकास के भौगोलिक मानदंडों की उपेक्षा की जो सार्वजनिक और व्यक्तिगत कीमत सम्बन्धित लोगों को चुकानी पड़ रही है, वह नीतिगत व प्रशासनिक लापरवाही नहीं तो क्या है? यक्ष प्रश्न बन चुका है। जानकारों का कहना है कि उत्तरकाशी के धराली गांव में खीरगंगा नदी के ऊपरी क्षेत्र में जो बादल फटा, उंससे आये फ्लैश फ्लड ने रास्ते में आने वाली हर चीज को अपनी चपेट में ले लिया। इससे प्रभावित इलाके से आ रहे विडियो दिल दहलाने वाले हैं। चूंकि अभी चारधाम यात्रा का सीजन चल रहा है और यह गांव गंगोत्री वाले रास्ते पर ही पड़ता है, जो श्रद्धालुओं के रुकने का एक अहम पड़ाव भी है। ऐसे में जानमाल की बड़े पैमाने पर हानि होने की आशंका से इनकार नहीं किया जा सकता है।

चूंकि उत्तरकाशी जैसे उत्तराखंड के जनपदों में ब्रेक के बाद प्राकृतिक आपदा आती रहती है। इसलिए यहाँ पर निरंतर/लगातार आफत आते रहने से शोधकताओं को और भी अधिक ध्यान देने की जरूरत है। ऐसा इसलिए कि हाल के बरसों में उत्तराखंड इस तरह की प्राकृतिक आपदाओं के केंद्र में रहा है। आंकड़े बताते हैं कि वर्ष 2021 में चमोली जनपद में, नंदा देवी राष्ट्रीय उद्यान के पास एक ग्लेशियर टूटकर गिर गया था। इसकी वजह से धौलीगंगा नदी में अचानक बाढ़ आ गई और तपोवन विष्णुगाड पनबिजली परियोजना में काम करने वाले कई श्रमिकों को जान गंवानी पड़ी।

इसी तरह, साल 2023 की शुरूआत में एक और धार्मिक पर्यटन स्थल जोशीमठ में भूस्खलन ने एक बड़ी आबादी को विस्थापित कर दिया। वहीं, साल 2013 में केदार घाटी में मची भयानक तबाही से लेकर अभी तक, छोटी-बड़ी ऐसी कई प्राकृतिक आपदाएं आ चुकी हैं। इसलिए पुनः सुलगता हुआ सवाल यहां आकर ही ठहर जाती है कि आखिर में पहाड़ से छेड़छाड़ कब रुकेगी? क्योंकि आरोप है कि उत्तराखंड में चल रहे बेशुमार पावर प्रॉजेक्ट्स ने पहाड़ों को खोखला कर दिया है। वहीं, इस दौरान क्षेत्र में बढ़ती आबादी, लाखों पर्यटकों के बोझ, अनियंत्रित निर्माण और घटती हरियाली को मिला दीजिए तो स्थिति विस्फोटक बन जाती है। इसलिए पर्यावरण प्रेमी पहाड़ अनुकूल विक-ास करने की मांग हमेशा उठाते रहते हैं।

इस बात में कोई दो राय नहीं कि बादल फटना एक प्राकृतिक घटना है, जिस पर इंसानों का कोई जोर नहीं। लेकिन, यह भी एक उद्वेलित करने वाला तथ्य है कि जब पानी के निकलने के रास्तों, नालों-गदेरों के मुहानों पर कंक्रीट के बड़े-बड़े स्ट्रक्चर खड़े हो चुके हैं, तो फिर उन तमाम जगहों पर, जिन रास्तों से पानी को बहना था, आखिर वह कैसे निकलेगा। क्योंकि उन रास्तों पर तो प्रकृति प्रेमी इंसान बस चुका है। स्पष्ट है कि यह जानबूझकर आफत बुलाने जैसा है। इसी के चक्कर में भारी धन-जन की हानि झेलनी पड़ती है और आपदा आने के बाद प्रशासन का जो सिर दर्द बढ़ता है, वह अलग बात है। इसलिए समकालीन स्थिति-परिस्थितियों को बदलने की जरूरत है। इंसान को संभलने की जरूरत है। सच कहूं तो उत्तराखंड को लेकर यह जारी बहस तकरीबन 5 दशक पुरानी है। वह यह कि विकास किस कीमत पर होना चाहिए? साल 1976 में, गढ़वाल के तत्कालीन कमिश्नर एमसी मिश्रा की अध्यक्षता में गठित एक कमिटी ने जोशीमठ को बचाने के लिए फौरन कुछ कदम उठाने की सिफारिश की थी- इनमें संवेदनशील जोन में नए निर्माण पर रोक और हरियाली बढ़ाना प्रमुख था। लेकिन 49 साल बाद आज वह रिपोर्ट पूरे पहाड़ के लिए प्रासंगिक हो चुकी है।

इसलिए केंद्रीय व राज्य सत्ता प्रतिष्ठान को चाहिए कि वे दूरदर्शिता भरा कदम उठाएं और पर्वतीय प्रदेशों की रमणीकता के दृष्टिगत उन पर फिदा होने वालों को बसने से रोके।

भारतीय सनातन संस्कृति भी पहाड़ों को साधना स्थली बताती है, जबकि मैदानी भूभाग जनजीवन के बसने हेतु श्रेष्ठ हैं। पर्वतीय घाटियों में भी रहा जा सकते है, लेकिन मैदानों सूखा या बाढ़ की तरह वहां भी ऐसा ही कुछ होते रहने की संभावना बनी रहती है।

रजिस्टर्ड पोस्ट का अंत : भरोसे की वह मुहर अब नहीं रहेगी

विजय गर्ग

डाकिए की साइकिल की घंटी, थैले से झाँकते पत्रों की उत्सुक प्रतीक्षा, और रजिस्टर्ड डाक की पावती पर हस्ताक्षर का रोमांच - ये पल भारतीयों के दिलों में एक युग की तरह अमर हैं। लेकिन अब यह युग समाप्त होने जा रहा है। भारतीय डाक विभाग ने 1 सितंबर, 2025 से अपनी 50 साल पुरानी रजिस्टर्ड पोस्ट सेवा को बंद करने क ऐलान किया है, जिसे अब स्पीड पोस्ट में समाहित कर दिया जाएगा। यह निर्णय केवल एक सेव का अंत नहीं, बल्कि लाखों लोगों की भावनाओं, यादों, और विश्वास से जुड़े एक इतिहास क समापन है। रजिस्टर्ड पोस्ट, जो कभी नौकरी के नियुक्ति पत्र, कानूनी नोटिस, या प्रियजनो के बधाई संदेशों का वाहक थी, अब केवल स्मृतियों में सिमट जाएगी। यह सेवा न केवल दस्तावेजों को जोड़ती थी, बल्कि यह भारत के ग्रामीण और शहरी जीवन की धड़कन थी, जो अब हमेशा के लिए थम जाएगी।

रजिस्टर्ड पोस्ट का इतिहास ब्रिटिश काल से शुरू होता है, जब इसे औपनिवेशिक शासन ने महत्वपूर्ण दस्तावेजों की सुरक्षित डिलीवरी के लिए शुरू किया था। यह सेवा अपन विश्वसनीयता और कानूनी मान्यता के लिए जानी जाती थी । अदालतों में इसके जरिए भेजे गए दस्तावेज साक्ष्य के रूप में स्वीकार किए जाते थे, और सरकारी विभागों, बैंकों, और शैक्षणिक संस्थानों ने इसका भरपूर उपयोग किया। 2024-25 की भारतीय डाक विभाग की रिपोर्ट के अनुसार, देश भर में लगभग 9.8 करोड़ रजिस्टर्ड डाक आइटम भेजे गए, जो इस सेवा की व्यापक लोकप्रियता को दशार्ता है। पावती सहित डाक (ऐकनॉलेजमेंट ड्यू) की सुविधा ने इसे और भी भरोसेमंद बनाया, क्योंकि प्राप्तकर्ता के हस्ताक्षर डिलीवरी की पुष्टि करते थे। यह सेवा उन दिनों की याद दिलाती है, जब डाकिया किसी संदेशवाहक से कम नहीं था, जो खुशी, उम्मीद, और कभी- कभी उदासी के पत्र लेकर घर-घर पहुंचता था ।

डिजिटल युग के आगमन और निजी कूरियर सेवाओं के बढ़ते दबदबे ने डाक विभाग को अपने परिचालन को पुनर्गठित करने के लिए प्रेरित किया है। सरकार का तर्क है कि रजिस्टर्ड पोस्ट को स्पीड पोस्ट में मिलाने से परिचालन अधिक कुशल होगा, ट्रैकिंग प्रणाली बेहतर होगी, और ग्राहकों को तेज सेवा मिलेगी। स्पीड पोस्ट, जो 1986 में शुरू हुई थी, अपनी त्वरित डिलीवरी और उन्नत ट्रैकिंग के लिए पहले ही प्रसिद्ध है। भारतीय डाक विभाग के 2025 के आंकड़ों के अनुसार, स्पीड पोस्ट की ट्रैकिंग प्रणाली 99.97त्न सटीक है, और यह सेवा 230 से अधिक देशों में अंतरराष्ट्रीय डिलीवरी प्रदान करती है। इसके विपरीत, रजिस्टर्ड पोस्ट की ट्रैकिंग सुविधा अपेक्षाकृत सीमित थी और यह मुख्य रूप से घरेलू डिलीवरी तक ही प्रभावी थी। डाक विभाग का दावा है कि इस एकीकरण से वार्षिक परिचालन लागत में 12त्न की कमी आएगी, जिससे संसाधनों का बेहतर उपयोग हो सकेगा।

निश्चित रूप से, इस बदलाव का आर्थिक असर आम आदमी पर पड़ना अवश्यंभावी है। रजिस्टर्ड पोस्ट, अपनी किफायती दरों के लिए लोकप्रिय, अब चुनौती बन सकती है। इसकी शुरूआती फीस 25.96 रुपये है, जिसमें प्रति 20 ग्राम या उसके हिस्से पर 5 रुपये अतिरिक्त लगते हैं। दूसरी ओर, स्पीड पोस्ट की शुरूआत 50 ग्राम तक के लिए 41 रुपये से होती है, जो दूरी और वजन के साथ बढ़ती जाती है - यह रजिस्टर्ड पोस्ट से 20-25 महंगी है। ग्रामीण भारत, जहां 1.56 लाख डाकघरों में से 89न (भारतीय डाक विभाग, 2025 वार्षिक रिपोर्ट) संचार का प्रमुख साधन हैं, वहां यह बदलाव छोटे व्यापारियों, किसानों और आम नागरिकों के लिए भारी पड़ सकता है। रजिस्टर्ड पोस्ट की सस्ती दरें लाखों लोगों के लिए वरदान थीं, लेकिन अब स्पीडपोस्ट की बढ़ी लागत ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर नया बोझ डाल सकती है ।

इस निर्णय का भावनात्मक पहलू भी गहरा है। आज की पीढ़ी, जो ऐप आधारित कूरियर सेवाओं और डिजिटल संचार की आदी है, शायद इस बदलाव को सामान्य माने। लेकिन पुरानी पीढ़ी के लिए रजिस्टर्ड पोस्ट केवल एक सेवा नहीं थी, बल्कि उनके जीवन की कहानियों का हिस्सा थी। डाकिए की वह साइकिल, जिसकी घंटी सुनकर बच्चे और बड़े उत्साह से दरवाजे की ओर दौड़ते थे, वह लाल डाक पेटी, जो प्रेम पत्रों से लेकर सरकारी सूचनाओं तक का गवाह थी, और वह पावती, जो विश्वास की मुहर थी – ये सभी अब केवल स्मृतियों में रह जाएंगे । रजिस्टर्ड पोस्ट ने न केवल दस्तावेज पहुंचाए, बल्कि यह उन पलों को भी जीवंत किया, जब लोग अपने प्रियजनों के पत्रों का इंतजार करते थे। यह सेवा उस समय की याद दिलाती है, जब संचार का मतलब केवल सूचना का आदान- प्रदान नहीं, बल्कि भावनाओं का एक सेतु था।

यह बदलाव भारतीय डाक विभाग की आधुनिकीकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम हो सकता है, लेकिन यह एक ऐसी विरासत का अंत भी है, जो ब्रिटिश काल से लेकर स्वतंत्र भारत तक लोगों के जीवन का हिस्सा रही। रजिस्टर्ड पोस्ट का नाम अब डाक विभाग के रिकॉर्ड और लोगों की स्मृतियों में ही बचेगा। इस बदलाव के दीर्घकालिक प्रभाव अभी देखने बाकी हैं। क्या स्पीड पोस्ट रजिस्टर्ड पोस्ट की विश्वसनीयता और किफायती दरों को पूरी तरह प्रतिस्थापित कर पाएगी ? क्या ग्रामीण भारत, जहां डिजिटल पहुंच अभी भी सीमित है, इस बदलाव को सहजता से स्वीकार कर पाएगा? ये सवाल समय के साथ जवाब पाएंगे। लेकिन एक बात निश्चित है- रजिस्टर्ड पोस्ट का अंत केवल एक डाक सेवा का बंद होना नहीं है, बल्कि यह उस विश्वास, उन यादों, और उस युग का समापन है, जो भारतीय डाक विभाग की आत्मा में बसा था। यह बदलाव हमें यह भी सिखाता है कि प्रगति की राह में हमें अपनी कीमती परंपराओं को अलविदा कहना पड़ता है, भले ही वह कितना ही कष्टकारी क्यों न हो।

मलोट पंजाब

चीन पर भरोसा करके फिर चोट खाने के रिस्क क्यों उठा रहे हैं भारत के प्रधानमंत्री मोदी?

जब भी हमारे देश का कोई प्रधानमंत्री चीन, पाकिस्तान और बांग्लादेश जैसे शत्रु देशों से वैश्विक कूटनीति के नाम पर प्रेम और भरोसे के पींगे बढ़ाना चाहता है, या फिर नेपाल, श्रीलंका, मालदीव, म्यांमार या तिब्बतियों पर भारतीयों की गाढ़ी कमाई लुटाता है तो मेरे मन में एक ही सवाल पैदा होता है कि हमारे इन नेताओं को इतिहास का ज्ञान नहीं है, या फिर भौगोलिक सच्चाई से ये नादान हैं। क्या इन्हें उन वीर जवानों और साम्प्रदायिक दंगा, आतंकवाद, नक्सलवाद, संगठित अपराध की भेंट चढ़े आमलोगों व सुरक्षा कर्मियों के चेहरे याद नहीं आते, उनकी विधवाओं और बच्चों, वृद्ध माता पिता आदि की याद नहीं आती, जिनकी असमय मौत का एकमात्र कारण चीन, पाकिस्तान, बांग्लादेश या इनका रिंग मास्टर अमेरिका की विध्वंसक नीतियां रही हैं। मसलन, यहां पर सवाल भूमि के किसी कब्जाए हुए टुकड़े या सांप्रदायिक मिजाज पर वर्चस्व की मानसिकता का नहीं है, बल्कि उन दुर्भाग्यपूर्ण राजनीतिक-प्रशासनिक फैसलों से जुड़ा हुआ है जिसकी कीमत हमारे वीर जवानों और आम आदमियों को चुकानी पड़ती है। जैसा कि पूर्व प्रधानमंत्री अटलबिहारी बाजपेयी ने कहा था कि हम इतिहास बदल सकते हैं, लेकिन भूगोल नहीं, के बारे में सिर्फ इतनी सी दलील देना चाहूंगा कि आप इतिहास और भूगोल को यथावत रहने दीजिए, बस अपने राजनीति विज्ञान के विषय वस्तु बदल दीजिए।

आपको पता होना चाहिए कि राजनीति विज्ञान परिवर्तन शील होता है, इसलिए इसे हमारे वीर जवानों और आम आदमियों के अनुकूल बना दीजिए। आपको भी इस बात का आभास होगा कि हमारे दलित-पिछड़े लोग इन सूक्ष्म प्रशासनिक बारीकियों को नहीं समझ पाते हैं, इसलिए इस अहम बदलाव के लिए किसी जनादेश का इंतजार मत कीजिए, बल्कि अपनी अंतरआत्मा से फैसले लीजिए। यह बात मैं इसलिए उठा रहा हूँ कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) के शिखर सम्मेलन में हिस्सा लेने के लिए इस महीने के आखिर में चीन जा सकते हैं। यह सम्मेलन 31 अगस्त और 1 सितंबर को चीन के उत्तरी शहर तियानजिन में होना है। सवाल है कि ऐसा अप्रत्याशित कदम वह तब उठा रहे हैं, जब अमेरिका-चीन प्रेरित हिन्दू विरोधी पाकिस्तानी आतंकवादी पहलगाम हमला और ऑपरेशन सिंदूर से मिले जख्मों को ज्यादा दिन नहीं बीते हैं, जबकि साल 2020 में पूर्वी लद्दाख की गलवान घाटी में भारत और चीन के सैनिकों के बीच झड़प के बाद यह मोदी की पहली चीन यात्रा होगी। वह इससे पहले 2018 में चीन गए थे। सीधा सवाल है कि जब प्रधानमंत्री मोदी गलवान सैन्य झड़प से इतने व्यथित थे कि लगातार पांच सालों तक चीन नहीं गए तो अब फिर पहलगाम कांड के तुरंत बाद ऐसा क्यों कर रहे हैं? क्या आपकी अंतरात्मा अब मर चुकी है या फिर अप्रत्याशित अमेरिकी धोखे मिलने के बाद अगले चीनी धोखे खाने की बुनियाद रखने को लालायित मालूम पड़ते हैं! क्या आपको नहीं पता कि जवाहरलाल नेहरू और नरेंद्र मोदी की सद्भावना को मुंह को मुंह चिढ़ाने वाला चीन कभी भी भारत का सगा नहीं हो सकता। सुलगता सवाल है कि वर्ष1962 से साल 2020 तक जब चीन की फितरत नहीं बदली तो आगे फिर किस नीतिगत करिश्मे की उम्मीद आपको है। क्या वह डोकलाम झड़प विस्मृत कर चुके हैं? क्या वह तवांग दंश भूल चुके हैं? क्या बोमडिला उन्हें याद नहीं? क्या आपकी इस यात्रा से लद्दाख से लेकर अरुणाचल प्रदेश तक की उसकी क्षुद्र मानसिकता बदल जाएगी? क्या भारत को उसके ही पड़ोसियों द्वारा घेरने की उसकी फितरत बदल जाएगी? यहां पर मैं यह समझ सकता हूँ कि हमारे कतिपय असरदार पर गद्दार नेताओं-अधिकारियों-उद्योगपतियों की तिकड़ी ने क्षणिक लाभवश अदूरदर्शिता दिखाते हुए अमेरिकी दबाव में भारतीय अर्थव्यवस्था को चीनी अर्थव्यवस्था पर निर्भर बना दिया। लेकिन इसी दिक्कत को दूर करने के लिये ही तो यूपीए के प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह को 10 वर्षों के बाद सत्ता से बाहर करते हुए एनडीए के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को केंद्रीय सत्ता सौंपी गई। आप पिछले 11 वर्षों से सत्ता में हैं, लेकिन यह समझने में असमर्थ प्रतीत हो रहे हैं कि रूसी दबाव में चीनी मित्रता का प्रयास अपने ही पैर में कुल्हाड़ी मारने जैसा मूर्खता भरा कदम साबित होगा। यह जान लीजिए कि इतिहास खुद को दोहराता है और आप इससे बच नहीं सकते। मेरी स्पष्ट राय है कि अमेरिका से तल्खी के बीच चीन-ईरान से बढ़ रही नजदीकी कदापि भारत के पक्ष में नहीं होगी। खबर है कि पीएम नरेन्द्र मोदी एससीओ लीडर्स समिट में चीन के राष्ट्रपति शी चिनफिंग से मुलाकात कर सकते हैं। वहीं इस दौरान वो रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन से भी द्विपक्षीय मुलाकात कर सकते है।

रक्षाबंधन के बदलते मायने: परंपरा से आधुनिकता तक

रक्षाबंधन के बदलते मायने हमें यह समझाते हैं कि त्योहार केवल रस्में नहीं होते, वे विचार होते हैं, भावना होते हैं। आज का रक्षाबंधन हमें यह सीख देता है: कि रक्षा एकतरफा नहीं, परस्पर होती है। कि रिश्ते खून से नहीं, भावना से बनते हैं। कि प्रकृति, समाज और देश भी हमारी रक्षा के हकदार हैं। और यह कि महिला केवल संरक्षित नहीं, संरक्षक भी हो सकती है। रक्षाबंधन अब केवल एक पर्व नहीं, एक दार्शनिक दृष्टिकोण है – जो कहता है कि प्रेम, समर्पण और समानता से ही समाज और रिश्ते टिक सकते हैं।

भारत विविधताओं से भरा देश है, जहां हर त्यौहार न केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक होता है, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक रिश्तों को भी मजबूत करता है। इन्हीं में से एक विशेष पर्व है – रक्षाबंधन, जो भाई-बहन के रिश्ते की मिठास, प्रेम और सुरक्षा का प्रतीक है। लेकिन बदलते समय, समाज, तकनीक और सोच के साथ-साथ रक्षाबंधन के मायने भी बदल रहे हैं। यह बदलाव केवल रस्मों तक सीमित नहीं है, बल्कि इस पर्व की आत्मा, इसके उद्देश्य और इसके सामाजिक संदर्भ में भी स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। रक्षाबंधन की जड़ें भारतीय इतिहास, पौराणिक कथाओं और सामाजिक परंपराओं में गहराई से जुड़ी हैं। द्रौपदी और श्रीकृष्ण की कथा हो या रानी कर्णावती द्वारा हुमायूं को भेजी गई राखी, यह पर्व सदा से रक्षक और संरक्षित के बीच एक नैतिक संकल्प का प्रतीक रहा है। पहले के समय में राखी केवल भाई-बहन के खून के रिश्ते तक सीमित थी। बहन भाई की कलाई पर राखी बाँधती थी और भाई जीवनभर उसकी रक्षा करने का वचन देता था। यह रिश्ता स्नेह, विश्वास और समर्पण से भरा होता था।

अब रक्षाबंधन का दायरा केवल खून के रिश्तों तक सीमित नहीं रहा। आज कई महिलाएं अपने दोस्तों, सहकर्मियों, शिक्षकों, सैनिकों और यहां तक कि प्रकृति को भी राखी बाँधती हैं। यह दशार्ता है कि ह्ररक्षाह्व अब केवल एक व्यक्ति विशेष का दायित्व नहीं, बल्कि सामाजिक और भावनात्मक संबंधों की व्यापक जिम्मेदारी बन चुका है। इसका सबसे सुंदर उदाहरण है कि अब बहनें भी अपने छोटे भाइयों को कहती हैं – ह्लमैं भी तेरी रक्षा करूँगी ह्व यानी सुरक्षा का रिश्ता अब एकतरफा नहीं रहा, यह परस्पर बन गया है। तकनीक ने आज रिश्तों के समीकरण ही बदल दिए हैं। पहले जहां राखी भेजने के लिए डाकघर जाना पड़ता था, अब एक क्लिक में डिजिटल राखियाँ, वीडियो कॉल, ऑनलाइन गिफ्टिंग और वर्चुअल सेरेमनी हो रही हैं। विदेशों में बसे भाई-बहन अब भले दूर हों, लेकिन वीडियो कॉल पर राखी बाँधने की परंपरा, स्क्रीन पर तिलक और डिजिटल मिठाई ने एक नई तरह की जुड़ाव की भावना पैदा की है। कुछ लोग भले इसे भावनाओं की कमी कहें, लेकिन सच्चाई यह है कि तकनीक ने दूरी को पाटने का जरिया भी दिया है।

पहले रक्षाबंधन पर भाई बहन को मिठाई और उपहार देता था। यह एक तरह से प्रेम की अभिव्यक्ति थी। लेकिन अब कई बहनें कहती हैं – ह्रभैया, गिफ्ट नहीं चाहिए, थोड़ी सी फुर्सत चाहिए, समय चाहिए, समझ चाहिए ह्न आज की बहन आत्मनिर्भर है। वह भावनात्मक सुरक्षा, मानसिक सहयोग और बराबरी की भागीदारी चाहती है। उपहार की जगह अब रिश्तों में पारदर्शिता, संवाद और समय की मांग अधिक हो गई है। पुराने जमाने में रक्षाबंधन का अर्थ था – ह्रभाई बहन की रक्षा करेगा ह्न परंतु आज यह परिभाषा बदल रही है। लड़कियाँ भी आज आत्मनिर्भर हैं, अपने भाइयों की मदद कर रही हैं, उन्हें मानसिक और आर्थिक संबल दे रही हैं। रक्षाबंधन अब यह नहीं कहता कि केवल भाई ही रक्षक होगा, बल्कि यह दशार्ता है कि भाई और बहन दोनों एक-दूसरे की ज़िंदगी में सुरक्षा, समर्थन और प्रेरणा बन सकते हैं।

आज के समय में रक्षाबंधन केवल भाई-बहन का पर्व नहीं रहा, यह प्रकृति की रक्षा, सामाजिक सौहार्द और समानता का प्रतीक भी बन चुका है। कई स्थानों पर पेड़ों को राखी बाँधने की परंपरा चल पड़ी है – ह्रवृक्ष-रक्षा बंधनह्न। बच्चें और महिलाएं वृक्षों को राखी बाँधकर यह संदेश दे रही हैं कि हम केवल मानव की नहीं, प्रकृति की भी रक्षा के लिए प्रतिबद्ध हैं। इसी तरह से सैनिकों को राखी भेजना यह बताता है कि देश की रक्षा करने वाले वीरों के साथ भी हम भावनात्मक रूप से जुड़े हैं। बहनें अब केवल रक्षा की याचक नहीं, बल्कि स्वाभिमानी, आत्मनिर्भर और संवेदनशील भी हैं। कई परिवारों में बहनें ही भाइयों की आर्थिक, शैक्षणिक या सामाजिक मदद कर रही हैं। यह बदलाव यह संकेत करता है कि रक्षाबंधन अब पौरुष और स्त्रीत्व के सांचे से बाहर निकल कर इंसानी मूल्यों और बराबरी के धरातल पर खड़ा हो रहा है। आज के इस व्यस्त जीवन में भावनाओं की अभिव्यक्ति के तरीके भले बदल गए हों, लेकिन उनकी अहमियत कम नहीं हुई है। भाई-बहन अब केवल राखी के दिन नहीं, सालभर एक-दूसरे के जीवन में सहयोगी बने रहते हैं। रक्षाबंधन एक बहाना है उन रिश्तों को फिर से जीने का, जिनमें कभी झगड़े थे, कभी मिठास, कभी नाराजगी और कभी अपार स्नेह। यह पर्व हमें याद दिलाता है कि रिश्ते बनाए नहीं जाते, निभाए जाते हैं।

आज रक्षाबंधन केवल हिंदू धर्म या भारतीय संस्कृति तक सीमित नहीं रहा। यह पर्व अब सांप्रदायिक सौहार्द, राष्ट्रीय एकता और सामाजिक समरसता का प्रतीक भी बन चुका है। कई जगह मुस्लिम लड़कियाँ हिंदू भाइयों को राखी बाँधती हैं, ईसाई बच्चे सैनिकों को राखी भेजते हैं – यह सब इस बात का संकेत हैं कि रक्षा का संकल्प मानवता का संकल्प है, न कि केवल किसी धर्म, जाति या समुदाय का। रक्षाबंधन के बदलते मायने हमें यह समझाते हैं कि त्योहार केवल रस्में नहीं होते, वे विचार होते हैं, भावना होते हैं। आज का रक्षाबंधन हमें यह सीख देता है: कि रक्षा एकतरफा नहीं, परस्पर होती है। कि रिश्ते खून से नहीं, भावना से बनते हैं। कि प्रकृति, समाज और देश भी हमारी रक्षा के हकदार हैं। और यह कि महिला केवल संरक्षित नहीं, संरक्षक भी हो सकती है। रक्षाबंधन अब केवल एक पर्व नहीं, एक दार्शनिक दृष्टिकोण है – जो कहता है कि प्रेम, समर्पण और समानता से ही समाज और रिश्ते टिक सकते हैं।

प्रियंका सौरभ

घूँघट की बगावत

10 अगस्त 2025

प्रत्येक रविवार को प्रकाशित
हिन्दी साप्ताहिक समाचार पत्र

6

जहीरा का फिल्मी सफर एक सीधी लाइन में नहीं चला वे कभी मुख्य अभिनेत्री बनती थी वो बायी सहायक अभिनेत्री कुछ फिल्मों में उन्होंने बोल्ड किरदार निभाए थे। फिर भी एक ऐसी अभिनेत्री का फिल्म जगत से निकल जाना हैरान करने वाला सवाल है। खैर, फिल्म जगत से दूर होने के बाद उन्होंने लंदन के किसी बिजनेसमैन से शादी कर ली और वहीं बस गई। फिल्म इतिहास कारों के अनुसार कुछ पंजाबी फिल्मों में काम करने के बाद जहीरा ने 1902 में फिल्म जगत को अलविदा कह दिया और लंदन लौट आयीं।

जहीरा की किस्मत में फिल्मों की चकाचौंध जिंदगी नहीं लिखी थी

जहीरा : ये वही अदाकारा है जिन्होंने देवानन्द की फिल्म गैम्बलर में जूली का किरदार निभाया था। तुम्हारे हाथ में तो लाल गुलाब है जबी, तुम्हारे लिए ही तो लाई हूँ टेबल पर रख दूं या इन्हीं के साथ सुला दूं।' इसके साथ हो वह कई फिल्मों में नजर आई। पर समय के साथ उनकी शख्सियत फीकी पड़ती गई और आज देसी गुमनामी भरी जिंदगी जी रही हैं। ये तो बता जाना किधर है। जहीरा का जन्म कब और कहां हुआ था ये पता लगाना थोड़ा मुश्किल है। लेकिन एक पंजाबी राजपूत मुस्लिम घराने से ताल्लुक रखती थीं। बहुत छोटी उम्र में व इंग्लैंड जा कर बस गई और वहीं उनकी परवरिश हुई। कहा जाता है कि- उनका परिवार नहीं चाहता था कि जहीरा फिल्मी दुनिया में कदम रखें पर अपने परिवार की मर्जी के खिलाफ जाकर उन्होंने एक अंग्रेजी फिल्म में एक छोटा सा किरदार निभाया।

ये जेम्स बांड सिरीज की छठी फिल्म थी जिसका नाम था ऑन हर मैजिस्टीस सीक्रेट सर्विस। इसमें उन्होंने जारा का किरदार निभाया था। भले ही यह एक छोटी फिल्मी भूमिका थी पर इसमें एक बड़ा प्रभाव छोड़ा। इसके बाद जहीरा ने फ्रेंच धारावाहिक इमिग्रेंट-77 में भी काम किया। इसी दौरान जब सुनील दत्त और नरगिस लंडन आए तो उनकी मुलाकात जहीरा से हुई। सुनील दत्त ने उन्हें भारत आकर देवानन्द की फिल्म गैम्बबर में काम करने का प्रस्ताव दिया और इस तरह 1971 में जहीरा का हिंदी फिल्मों में आगमन हुआ। गैम्बलर फिल्म सुपर हिट साबित हुई और इससे जहीरा ने एक ऐसी लड़की का किरदार निभाया जो देवानंद से बे इंतेहा प्यार करती थी। पर देवानन्द ने उन्हें एक दोस्त से ज्यादा कुछ नहीं गाना। गैम्बलर की सफलता के साथ जहीरा बहुत प्रसिद्ध हो गई क्योंकि उनके चेहरे से एक खास मासूमियत झलकती थी। इसके बाद उनकी शक्ल की तुलना परवीन बाबी से की जाने लगी। सबको लगता था कि जहीरा परवीन बॉबी की हम शक्ल हैं। पर एक अहम बात जो यह भ्रम पैदा करती है कि- कई लोगों को लगता है कि- फिल्म-गैम्बलर में जहीरा नहीं नरगिस की

चचेरी बहन जाहिदा थीं इसलिए कि उस फिल्म में ये दोनों अभिनेत्रियां मौजूद थीं। जहीरा और जाहिदा । दोनों ने अपनी अपनी भूमिकाएं निभाई थीं हालांकि परबीन बाँबी जैसी शक्ल होने भर से कोई खास फायदा नहीं हुआ क्योंकि उनमें अभिनय की वो खूबी नहीं थी जिससे फिल्मकार परवीन बॉबी जैसी बड़ी फिल्में ऑफर करते। ओ मेरी जान, बाय गॉड, मैं तेरी लाइफ बना दूंगा। लगभग 6-7 साल तक जहीरा साइड हीरोइन के तौर पर ही रहीं। फिरोज खान की धर्मात्मा, वह पूरी भव्यता के साथ नजर आईं। फिरोज खान के सामने उनकी चमक किसी से कम नहीं थी। जिंदादिल. टैक्सी-टैक्सी, नौकरी, आहूति - खुदा गवाह हर फिल्म ने उनकी लोकप्रियता में इजाफा किया। ' मैं तलाक नहीं लूंगी ! आज इससे शादी फिर कल उसे तलक अब मैं ज्यादा तमाशा नहीं' बनना चाहती। लेकिन ये तो मजहब की बात है बेटी मजहब किसी की बुराई नहीं चाहता अब्बा। मर्दों ने अपने

फायदे के लिए, इसे सिर्फ मर्दों का मजहब बनाया गया है। अब मुझे जानवर की तरह इधर से उधर हांका जा रहा है। बेटी जो हो गया उसे भूल जाओ ना। इसी बीच जाहिरा ने बी ग्रेड फिल्मों में काम करना शुरू कर दिया। 1914 की फिल्म कॉल गर्ल में वह एक बोल्ड अवतार में नजर आई। तुम सुनना चाहते होना तो सुनो तुम्हें मिलने पहले मैं यह थी- कॉल गर्ल । वो लड़की जिसे कोई भी अमीर और शौकीन आदमी सिर्फ एक टेलीफोन करके बुला सकता है। अपनी हवस मिटाने के लिए। इस वजह से उन्हें वैसी ही फिल्में उन्हें मिलने लगी। और इसका नुकसान ये हुआ कि जहीरा के अभिनय की खूबी कभी खुलकर सामने नहीं आ पाई। सुनील दत्त की फिल्म काला आदमी में भी जहीरा दिखाई दी। लेकिन फिल्म के हित होने का उन्हें कोई खास फायदा नहीं हुआ। जहीरा के जीवन में सबसे बड़ा मौका तब आया जब हषिकेश मुखर्जी जैसे नामी डायरेक्टर में उन्हें अपनी फिल्म नौकरी मे लीड एक्ट्रेस के तौर पर साइन किया इसमें उनके हीरो खुद राजेश खन्ना थे। राजकपूर और नादिरा ने इस फिल्म में काम किया था। इसके बाद राजेश रोशन की फिल्म आहूति में भी जहीरा ने काम किया। इस फिल्म में भी वह साइड हीरोईन के रूप में दिखाई दी।

रक्षाबंधन आज सिर्फ पारंपरिक पर्व नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक आंदोलन जैसा है। लेकिन दुख इस बात का है कि इस पर्व की आत्मा धीरे-धीरे खोती जा रही है। आज बहनों के लिए यह पर्व सजने-संवरने और उपहार पाने का माध्यम बनता जा रहा है, जबकि भाइयों के लिए यह केवल एक औपचारिकता बनकर रह गया है। राखी के धागों की वह पवित्रता, भावनाओं की वह गहराई, अब कम होती जा रही है। यह पर्व अब बाज़ारवाद और दिखावे के जाल में उलझता नजर आ रहा है।

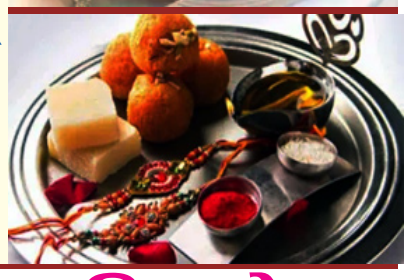

नारी रक्षा का संकल्प, एक सामाजिक चेतना

भारत की सांस्कृतिक परंपराओं और त्योहारों की भूमि पर रक्षाबंधन एक ऐसा पर्व है जो केवल भाई-बहन के रिश्ते तक सीमित नहीं, बल्कि संपूर्ण समाज में आत्मीयता, कर्तव्यबोध, और नैतिक मूल्यों के पुनर्संवेदन का पर्व है। यह पर्व नारी अस्मिता, समानता, सुरक्षा और प्रेम की भावनाओं का प्रतिनिधित्व करता है। राखी का धागा जितना कोमल दिखता है, उतनी ही उसमें गहराई और दृढ़ता होती है, यह एक ऐसा लौकिक बंधन है, जो प्रेम, आदर्शों और जिम्मेदारियों से बंधा होता है। रक्षाबंधन कोई साधारण पर्व नहीं, यह आदर्शों का हिमालय है, संकल्पों का सोपान है। यह पर्व सिर्फ भाई-बहन के प्रेम की रस्म नहीं, बल्कि पुरुष समाज द्वारा नारी को आश्वस्त करने, उसका मान-सम्मान बनाए रखने की शपथ का दिन है। यह दिन हमें याद दिलाता है कि नारी केवल स्नेह की पात्र नहीं, वह शक्ति, श्रद्धा और समाज की दिशा तय करने वाली एक सशक्त प्रेरणा भी है।

आज जब महिलाएं समाज के हर क्षेत्र में बुलंदियों को छू रही हैं, सेना से लेकर विज्ञान, शिक्षा से लेकर खेल तक तब रक्षाबंधन उन्हें केवल भावनात्मक सुरक्षा नहीं, सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक सम्मान दिलाने का भी माध्यम बनता है। रक्षाबंधन की महत्ता को समझने के लिए उसके ऐतिहासिक संदर्भों को जानना आवश्यक है। भविष्य पुराण में उल्लिखित कथा के अनुसार जब देव-दानव युद्ध में दानव भारी पड़ने लगे, तब इंद्राणी ने अपने पति इन्द्र की रक्षा हेतु रेशम का धागा मंत्रों के साथ उनके हाथ पर बांधा, जिससे इंद्र विजयी हुए।

मुगल काल में रानी कर्मवती ने जब चितौड़ पर संकट देखा, तो बादशाह हुमायूं को राखी भेजकर रक्षा की याचना की। हुमायूं ने धर्म, संप्रदाय और सत्ता से ऊपर उठकर उस धागे की लाज रखी और चितौड़ की रक्षा में अपनी ताकत झोंक दी। महाभारत में जब भगवान श्रीकृष्ण की उंगली से रक्त बहा, द्रौपदी ने अपनी साड़ी का पल्लू फाड़कर पट्टी बांध दी। श्रीकृष्ण ने उस प्रेम को जीवन भर निभाया और चीरहरण के समय द्रोपदी की रक्षा की। यह केवल ऋण चुकता नहीं था, यह आदर्शों की प्रतिज्ञा थी। इसी तरह सिकंदर और पुरू की कथा इस बात को दशार्ती है कि राखी का एक धागा युद्ध भूमि में भी जीवनदान का कारण बन सकता है। ये प्रसंग हमें बताते हैं कि राखी केवल प्रेम का प्रतीक नहीं, बल्कि रक्षा, आदर्श और सम्मान की जीवंत प्रतिमा है।

रक्षाबंधन आज सिर्फ पारंपरिक पर्व नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक आंदोलन जैसा है। लेकिन दुख इस बात का है कि इस पर्व की आत्मा धीरे-धीरे खोती जा रही है। आज बहनों के लिए यह पर्व सजने-संवरने और उपहार पाने का माध्यम बनता जा रहा है, जबकि भाइयों के लिए यह केवल एक औपचारिकता बनकर रह गया है। राखी के धागों की वह पवित्रता, भावनाओं की वह गहराई, अब कम होती जा रही है। यह पर्व अब बाजारवाद और दिखावे के जाल में उलझता नजर आ रहा है। इस बदलती सोच को थामना और मूल भावनाओं को पुनः प्रतिष्ठित करना आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है। इस पर्व का मूल उद्देश्य नारी के प्रति श्रद्धा, सुरक्षा और कर्तव्य का निर्वहन है, न कि केवल उपहार और दिखावे का आदान-प्रदान। भाइयों को चाहिए कि वे बहन की रक्षा की शपथ केवल शब्दों में नहीं, जीवन के प्रत्येक व्यवहार में निभाएं। बहनें भी राखी को केवल संबंध या औपचारिकता न समझें, बल्कि इस पर्व को नारी स्वाभिमान और सामाजिक बदलाव के एक माध्यम के रूप में लें।

आज जब समाज में महिलाओं के साथ अपराध बढ़ रहे हैं, जब बच्चियों से लेकर वृद्धाओं तक को भय और असुरक्षा का सामना करना पड़ रहा है, तब रक्षाबंधन एक ऐसा अवसर है जब हम केवल बहन नहीं, संपूर्ण नारी समाज की रक्षा का संकल्प लें। एक ऐसा संकल्प जो केवल राखी तक सीमित न हो, बल्कि जीवन भर के आचरण में झलके। यह पर्व हमें यह संदेश देता है कि नारी केवल स्नेह की नहीं, सम्मान की अधिकारिणी है। रक्षाबंधन भारत के विभिन्न अंचलों में अलग-अलग नामों से मनाया जाता है। उत्तर भारत में यह भाई-बहन के रिश्ते का पर्व है, वहीं महाराष्ट्र में नारली पूर्णिमा के रूप में समुद्र देवता को नारियल अर्पण कर मछुआरे समुद्र से अपने रिश्ते की रक्षा की प्रार्थना करते हैं। दक्षिण भारत में ह्यअवनी अविट्टमह्न के रूप में यह ब्राह्मणों का यज्ञोपवीत संकल्प का पर्व है। वहीं स्कन्द पुराण और श्रीमद्भागवत में उल्लिखित वामन अवतार की कथा में रक्षाबंधन को ह्यबलेवह्न के रूप में जाना जाता है, जब भगवान विष्णु ने तीन पग भूमि मांगकर राजा बलि का अभिमान तोड़ा था। इन सब कथाओं में एक ही संदेश है - अहंकार के स्थान पर समर्पण, दंभ के स्थान पर रक्षा, और स्वार्थ के स्थान पर सेवा।

आज रक्षाबंधन जैसे भावनात्मक और सांस्कृतिक पर्व भी कृत्रिम बुद्धिमता एवं संचार-क्रांति की आंधी में अपनी मूल आत्मा और संवेदना खोते जा रहे हैं। उपहारों की होड़, ब्रांडेड राखियों का प्रदर्शन, सोशल मीडिया पर दिखावे की होड़ ने इस पर्व को एक उपभोक्तावादी उत्सव में बदल दिया है। जहाँ पहले राखी एक भावनात्मक संबंध का प्रतीक थी, वहीं आज यह अधिकतर लेन-देन और औपचारिकता का माध्यम बनती जा रही है। इस प्रवृत्ति से पर्व की आत्मा, जिसमें बहन के प्रेम और भाई की जिम्मेदारी का गहन बोध निहित था, वह पीछे छूटता जा रहा है। इसलिए आवश्यक है कि हम रक्षाबंधन की प्रासंगिकता को केवल उपहारों और खर्च की दृष्टि से नहीं, बल्कि नारी सम्मान, आत्मीय रिश्तों और सामाजिक जिम्मेदारियों के दृष्टिकोण से समझें और मनाएं।

राखी का पर्व हमें मानवीय रिश्तों की फिर से व्याख्या करने का अवसर देता है। यह पर्व हमें याद दिलाता है कि हर स्त्री हमारी बहन है, समाज की, संस्कृति की, मानवता की। उसकी रक्षा केवल सामाजिक कर्तव्य नहीं, बल्कि मानवीय धर्म है। जब हर पुरुष स्त्री के प्रति अपने कर्तव्य को राखी की तरह पवित्र समझेगा, जब हर बहन अपने भाई में केवल उपहार देने वाला नहीं, बल्कि एक मूल्य-धारी रक्षक देखेगी, तब रक्षाबंधन केवल एक पर्व नहीं, एक क्रांति का आरंभ बनेगा।

रक्षाबंधन कोई मंच या मंचन नहीं है। यह प्रदर्शन का नहीं, आत्मचिंतन का पर्व है। हमें इस पर्व को बाजारवाद और औपचारिकता से निकालकर पुनः उसकी असली पहचान देना होगा। यह प्रेम और कर्तव्य के बीच की एक खूबसूरत कड़ी है। इस बार राखी के धागों को केवल कलाई तक न सीमित रखें, इन्हें हृदय से बाँधें, ताकि यह पर्व भाई-बहन के रिश्तों से आगे बढ़कर पूरे समाज में एक सशक्त और सुरक्षित वातावरण का निर्माण कर सके। तभी राखी के ये धागे सच्चे अर्थों में आदर्श बनेंगे और संकल्पों का सोपान।

ललित गर्ग

हम पांच फिल्म ने उदय चंद्र के फिल्मी करियर पर लगा दिया विराम

यहां पर आपको एक ऐसे कलाकार से रुबरु कराने वाले है जिन्हें देखकर शायद आप उनकी काबिलियत पर सवाल उठा दें । उनका नाम तो दूर मुमकिन है आपके उन्हें चुनिंदा फिल्मों में भी ठीक से पहचाना नहीं होगा। हम पांच 'और बातों बातों में जैसी क्लासिक हिट फिल्मों के जरिये आम जन तक पहुंचने की कोशिश करने वाले इस कलाकार का नाम है **उदयचन्द्र**

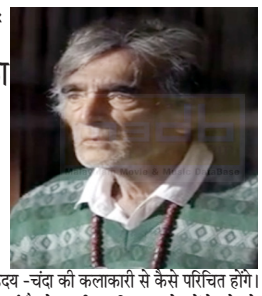

जब आपको गांव वाले मारते हैं तो राजा बचाता है जब राजा खुद ही मारने लगे तो भगवान बचाता है। हम पांच पांडव ये शकुनि मामा। जैसे संवाद और गीत की ये वह दो फिल्में हैं-जिनको आपने दूरदर्शन पर अनेकों बार देखी होंगी और हर बार आपने इस कलाकार के चेहरे को भी देखा होगा। अक्सर ये दावा किया जाता है कि उदय चन्द्र हम पांच के मुख्य कलाकारों में से एक थे लेकिन सच तो यह है कि इस फिल्म में उनका एक भी सोलों सीन नहीं है। स्पष्ट है, जब किसी कलाकार के नाम कोई हिट फिल्म ढूंढी जाती हैं तो काम से कम एक से ज्यादा सोलो सीन तो बनते ही हैं। वहीं फिला बातों बातों में उन्होंने एक केन्द्रीय भूमिका निभाने की कोशिश की थी लेकिन वह किरदार भी कहानी को सहारा देने वाला एक सहायक बिन्दु ही बन कर रह गया। इस फिल्म में उनका अभिनय बेहद सहज और स्वाभाविक था, शायद यही वजह रही कि आगे चलकर उन्हें बड़े पर्दे पर वह ... पहचान नहीं मिल पाई जिसके वह हकदार थे। 'यहां यह बता दें कि इस कलाकार को जिसे अक्सर लोग सामान्य अभिनेता मान रहे हैं वह अपने दौर के एक महान स्टेज कलाकार रह चुके हैं और कमाल की बात यह है कि आज भी के रंग मंच से पूरी तरह से जुड़े हुए हैं।

उपरोक्त दो फिल्मों के अलावा उन्होंने अनेक फिल्मों में अपनी अदाकारी का जादू बिखेरा है 'एक बबलू पूछे बबली से. क्या पूछे पगला पगली से, कदम उल्टा पड़ा तो प्यार की हस्ती मिटा देगी। सच्चाई नेकी शराफत ये सब बकवास है। मिसाल के तौर पर 1981 की सामाजिक फिल्म 'तिरुथा' को ही ले लीजिए। ऐसी फिल्म में अक्सर मजे हुए कलाकारों की जरूरत होती है और इसमें उदय-चंद्रा ने अपनी भूमिका बेहद शानदार तरीके से निभाया था। ये कहानी है गुलामी की। एक ऐसी औरत के सम्मान की और चंद पैसों के लिए खुद को गिरवी रखने की। इस फिल्म में कुरेन नांम का एक किरदार पचास रुपए के लिए एक जमींदार के यहाँ खुद को गिरवी रख देता है। ऐसा वह इसलिए करता क्योंकि चिरुथा से शादी जाने के लिए उसके पिता ने ये रकम मांगी होती है। शादी के बाद कुरेन अपनी पत्नी के साथ उस जमींदार के यहां खेती करने लगता है और वहीं' बस जाता है जो कि कुरेन खुद गिरवी था। इसलिए जमींदार के लिए उसकी पत्नी भी एक गिरवी सामान बन जाती है। ऐसी अनेकों गर्द और उनकी बीवियां भी उस जमींदार के यहां बंधुआ मजदूर थे।

जमींदार का बेटा मजदूरों की बीवियों को अपनी हवस का शिकार बनाता है। लेकिन जब उसकी नजर तिरुथा पर पड़ती है तो कुरेन उसका खून करके जेल चला जाता है। उसे पता होता है कि उसके जेल जाने के बाद जमींदार उसकी बाली को नहीं छोड़ेगा इसलिए वह अपनी बीवी को ऐसे इंसान के हवाले कर देता है, जो तिरुथा की शादी से पहले उससे प्यार करता था। उदय चन्द्र ने इसे निःस्वार्थ प्रेमी का किरदार निभाया है। कुरेन उदय चंद्र से साफ-साफ कह देता है कि- अगर वह चिरुथा से शादी कर ले तो जमींदार के लोग शायद तिरुथा का पीछा छोड़ देंगे और उसके गर्भ में पल रहे बच्चे को भी पिता का नाम मिल जाएगा। इसके बाद उदय चंद्र दस साल तक चिरुथा को अपने साथ रखते हैं जब कुरेन जेल से छूट कर उदय से मिलने आता है तो उसे लगता है कि चिरुथा में उदय से शादी कर ली होगी। पर उदय के मन में वह हवस नहीं थी जो जमींदार के बेटे में थी। आखिर कार कुरेन और चिरुथा दोनों एक हो जाते हैं। और उदय अपने ही घर से कहीं दूर निकल जाते हैं। उन्हें जाते हुए देखकर चिरुथा का बेटा उन्हें अप्पा -अप्पा कहकर रोने लगता है और इसी के साथ फिल्म समाप्त होती है।

.विचारणीय है कि- अगर ऐसे कथानक वाली फिल्में व्यवसायिक स्तर पर हिट होती तो क्या उदय चन्द्र जैसे कलाकार आज इतने लोकप्रिय ना होते। यकीनन होते लेकिन जब बड़े बैनर को फिल्मों में ऐसे ही असली कलाकारों को चंद डायलॉगभ देकर-चुप करा दिया जाता है तो दर्शक उदय -चंदा की कलाकारी से कैसे परिचित होंगे। यह एक कड़वी सच्चाई है जो हमारी इस फिल्म उद्योग में देखने को मिलती है।

जन्म 1950 में एक मराठी परिवार में हुआ था उनके फिल्मी कॅरियर शुरू होने से पहले ही मशहूर अभिनेत्री शबाना आजमी से उनके रिश्ते की बातें फिल्मी गलियारों की सुर्खिंया बन चुकी थीं। एक तरफ जहां शबाना आजमी बड़े पर्दे पर अपनी जगह बनाने के लिए संघर्ष कर रही थीं वहीं उदयचंदा स्टेज के सुपर स्टार बन चुके थे। अंग्रेजी भाषा पर इनकी जबरदस्त पकड़ थी। ऐसे में उदय-चंद्रा को फिल्मों में लाने वाले पहले शख्स बने अर्जुन हिंगोरानी जिन्होंने 1977 में खेल-खिलाड़ी का फिल्म बना कर उदय चंद्र को दूसरा मुख्य किरदार दिया। मजेदार बात यह है कि - उन्ही के अपोजिट शबाना आजमी को हिरोइन (नायिका) बनाया गया। चूंकि उस शबाना खुद कोई बड़ी हीरोइन नहीं थीं इसलिए मुख्य किरदार निभा रहे धर्मेन्द्र की हीरोइन के तौर पर हेमामालिनी से कुछ सीन फिल्माए गए। यहां यह भी बता दे कि शक्ति कपूर की भी यह पहली फिल्म थी। कलाकारों ने बेहतरीन अभिनय किया और फिल्म की कहानी भी अच्छी थी हालांकि इसने बॉक्स ऑफिस पर कोई खास कमल नहीं दिखाया क्योंकि दो गाए फिल्माए गए थे इसलिए मीडिया में संदेश पहुंच गया कि फिल्म जगत में एक नया हीरो आ चुका है इसके बाद बातों बातों में फिल्म रिलीज हई। इस बार भी दर्शकों ने उदय के किरदार को पसंद किया। लेकिन उनकी तीसरी फिल्म में उनके किरदार को इतना दबा दिया गया कि जब फिल्म सुपरहिट हुई तो इसका श्रेय उदयचंद्र के हिस्से में आया ही नहीं। वह फिल्म थी हम पांच । इस फिल्म ने उनके फिल्मी करियर पर विराम चिन्ह लगा दिया। उन्होंने एक साक्षात्कार के दौरान यह दावा किया था कि वह फिल्मों के लिए बने ही नहीं। हिंदी में वह रंग मंच पर अपनी पूरी ताकत लगा रहे है।

बाघों की संख्या में निरन्तर वृद्धि जारी

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में राष्ट्रीय पशु बाघों की संख्या में निरंतर वृद्धि जारी है। 2018 में हुई गणना में यूपी में जहां 173 बाघ थे, वहीं 2022 में बढ़कर यह संख्या 222 हो गई है।

प्रधान मुख्य वन संरक्षक (वन्यजीव) अनुराधा वेमुरी ने बताया कि उत्तर प्रदेश में बाघों की संख्या में वृद्धि हुई है। 2022 में हुई गणना के मुताबिक यूपी में कुल 222 बाघ हैं। उन्होंने बताया कि 2006 में बाघों की गणना में यूपी में 109, 2010 में 118, 2014 में 117, 2018 में 173 व 2022 में 222 पाए गए थे। दूधवा टाइगर रिजर्व में 2014 में 68, 2018 में 82 तथा 2022 की गणना में 135 टाइगर पाए गए। वहीं पीलीभीत टाइगर रिजर्व में वर्तमान में 63, अमानगढ़ टाइगर रिजर्व में 20, रानीपुर टाइगर रिजर्व में 4 बाघ हैं।

एम-स्ट्राइप्स पेट्रोलिंग के अंतर्गत जनपद लखीमपुर खीरी के अंतर्गत दूधवा टाइगर रिजर्व, बफर जोन व दूधवा टाइगर रिजर्व प्रभाग में औसतन कुल 152337 किमी. प्रतिमाह तथा बहराइच के अंतर्गत कतर्नियाघाट वन्यजीव प्रभाग में कुल 41684 किमी. प्रतिमाह सघन गश्त की जाती है। एम स्ट्राइप्स पेट्रोलिंग ऐप के माध्यम से दो पहिया, चार पहिया, पैदल, हाथी, साइकिल व नाव के माध्यम से यह गश्त होती है। वहीं हैबीटेट इंप्रूवमेंट, वाटर होल मैनेजमेंट व मानव वन्यजीव संघर्ष को न्यूनतम करने के लिए भी निरंतर अनेक प्रयास हो रहे हैं। रुहेलखंड के मुख्य वन संरक्षक पीपी सिंह ने बताया कि पहले आए दिन मानव वन्यजीव संघर्ष की घटनाएं होती थीं। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के मार्गदर्शन में 2019 में पीलीभीत में 'बाघ मित्र' कार्यक्रम प्रारंभ किया गया था। इसका उद्देश्य अप्रिय घटनाओं पर अंकुश लगाना था। यह कार्यक्रम काफी प्रभावी रहा। इसके बाद अक्टूबर 2023 में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने पीलीभीत में 'बाघ मित्र' ऐप की लॉचिंग भी की।

पीलीभीत टाइगर रिजर्व के प्रभागीय वनाधिकारी मनीष सिंह ने बताया कि पीलीभीत में बाघ मित्रों का व्हाट्सग्रुप बनाया गया है। इसमें आसपास के गांवों के रहने वाले 120 लोग 'बाघ मित्र' के रूप में जुड़े हैं। इसमें चार महिलाएं समेत अन्य युवा, बुजुर्ग भी शामिल हैं। बाघ मित्र के लिए आयु 18 वर्ष से अधिक होनी चाहिए। श्री सिंह ने बताया कि जंगल के समीप के पांच किमी. दूर के गांवों के ग्रामीणों को 'बाघ मित्र' बनाकर उन्हें वन विभाग की तरफ से प्रशिक्षण दिया गया। जंगल से बाहर बाघ या अन्य जानवर दिखने पर 'बाघ मित्र' तुरंत ग्रुप में लिखकर और फोन कर विभाग को भी जानकारी देते हैं। इससे विभाग के अधिकारी व कर्मचारी तत्काल अलर्ट हो जाते हैं और टीम को रवाना कर देते हैं। इसके जरिए समय रहते टीम एक्शन में आ जाती है। बाघ मित्र ऐप में जानवर की फोटो खींचकर ग्रामीण अपडेट कर सकते हैं। कई बार वे जानवर की सही पहचान नहीं कर पाते थे। इससे दिक्कत होती थी। फोटो अपडेट होने पर विभागीय लोग जानवर को पहचान लेते हैं। इससे लोकेशन भी मिल जाती है कि जंगल से बाघ की दूरी कितनी है। यदि बाघ खेत के पास है तो पहले मॉनीटरिंग टीम भेजते हैं। बाघ मित्र कार्यक्रम निरंतर चलाकर लोगों को सजग, सुरक्षित रखते हैं।

स्वामी/मुद्रक/प्रकाशक पंकज धर द्विवेदी द्वारा जनप्रकाशन प्रेस निकट रीड्स साहब का धर्मशाला से मुद्रित एवं 45, बादशाह बाग, जगन्नाथपुर, गोरखपुर से प्रकाशित।

संपादकः पंकज धर द्विवेदी

संपर्क सूत्र : ghoonghatkibagawat37@gmail.com